

Impact Factor-6.261

ISSN-2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

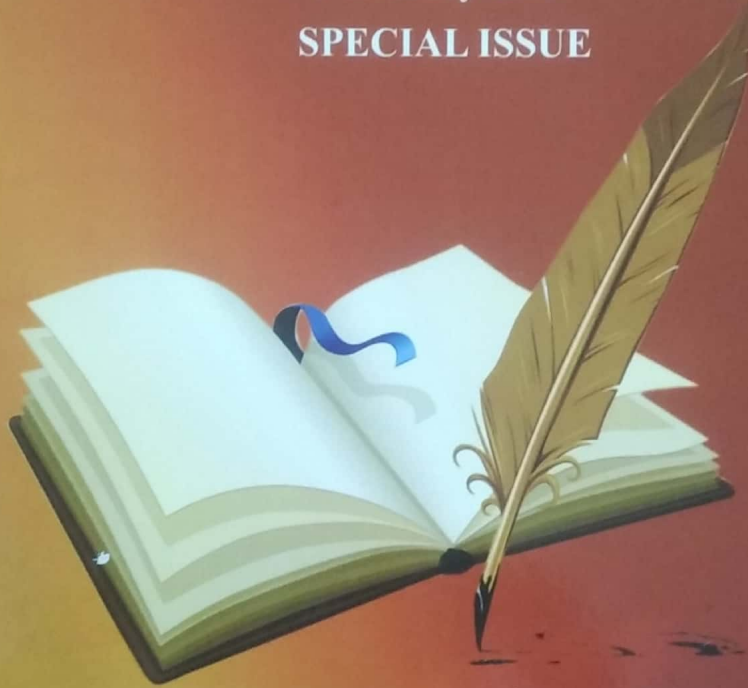
RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE



इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य :
संवेदना के स्वर

Guest Editor

Dr.P.K.Koparde

Dr.V.V.Arya

Chief Editor

Dr.Dhanraj T.Dhangar

Assist.Prof.(Marathi)

MGV'S Arts & Commerce College, Yeola,

Dist.Nashik (M.S.)



20	21 वीं सदी का ग़ज़ल साहित्य	- प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	78
21	मंजुल भगत की कहानियों में नारी विमर्श	प्रा.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव	82
22	बाल साहित्य : एक विमर्श	-डॉ. अर्चना परदेशी	85
23	21 वीं सदी का हिन्दी आत्मकथाओं में नारी विमर्श -	डॉ. के. श्याम सुन्दर	88
24	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता (नारी विमर्श के विशेष संदर्भ में)	प्रा.डॉ. बळीराम राख	91
25	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में व्यक्त स्त्री...	- प्रा. डॉ. देशपांडे व्ही.व्ही.	93
26	'दोहरा अभिशाप' : दलित स्त्री के संघर्ष की....	- डॉ.सहदेव वर्षारणी निवृत्तीराव	96
27	इक्कीसवीं सदी की कविता में नारी संवेदना	-प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार	100
28	इक्कीसवीं सदी का व्यंग्य साहित्य	- प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल, प्रा.व्यंकट खंदकुरे	104
29	कबूतरीयों की व्यथा : अल्मा कबूतरी	-डॉ.रोडे एस.सी.	107
30	'संजीव कृत उपन्यास 'जंगल जहाँ	-डॉ. मुनेवर एस. एल. पाटील सुखदेव रामा	109
31	हिजड़ों के अस्तित्व का प्रश्न	- डॉ.निम्मी ए.ए.	111
32	पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा में किन्नरों	- प्रा.डॉ.पांडुरंग दुकळे	115
33	इक्कीसवीं सदी की हिन्दी ग़ज़ल में नारी चेतना के स्वर	- डॉ. अविनाश कासांडे	117
34	मधु काँकरिया कृत 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास -	प्रा. नटवर संपत तडवी	122
35	श्री नरेष मेहता कृत 'षबरी' में चित्रित समस्या	- प्रा. वाघमारे के.एच.	125
36	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में स्त्री संवेदना	- प्रा.कुलकर्णी वनिता बाबुराव	128
37	इक्कीसवीं सदी का नाटक साहित्य और ममता कालिया	-प्रा. घनं प्रमोद किशनराव	131
38	21 वीं शती के कहानी साहित्य में स्त्री	- प्रा.बालिका रामराव कांबळे	133
39	'गुलाम मंडी' उपन्यास में चित्रित यथार्थवादी परिवेश	- अबू होरैरा	136
40	'ग्लोबल गाँव के देवता' (उपन्यास) में चित्रित यथार्थ	- इबरार खान	139
41	'आदिवासी' जनजाति की व्यथा :- 'ग्लोबल गाँव के देवता.'	-गुंड सचिन मधुकर	143



श्री नरेश मेहता कृत 'शबरी' में चित्रित समस्या और आधुनिक बोध

सहा.प्राध्यापक, वाघमारे के.एच.
हिंदी विभाग, कालिकादेवी महाविद्यालय शिरूर(कासार)
ता.शिरूर(कासार) जि.बीड-413249

भूमिका :-

श्री नरेश मेहता ने शबरी में शबरी की कथा निम्नवर्ग की एक साधारण स्त्री की आत्मिक एवं आध्यात्मिक संघर्ष की ऐसी कथा है जो रामायण के शीर्षस्थ पात्रों एवं चरित्रों में भी अपनी पहचान बनाये रखती है। कवि ने प्राचीन काल से चले आ रहे वर्ण व्यवस्था के ज्वलन्त प्रश्न का साधारण नवीन सन्दर्भों में किया है। कवि कहते हैं कि अन्त्यज जाति से सम्बन्धित व्यक्ति भी अपने कर्मों से उर्ध्वता प्राप्त कर सकता है। इस वर्गव्यवस्था प्रधान समाज में वर्ग मुक्त होना अत्याधिक बिकट हो गया है फलतः; हमारा समाज श्रम और कर्म दोनों ही क्षेत्रों में भटक गया है जो कि तपते मरुस्थल में कोई खो जाता है। शबरी का पूरा चरित्र राम की एकनिष्ठ भक्ति करनेवाली तपस्विनी के रूप में प्रसिद्ध है। वाल्मीकि ने शबरी को अत्यन्त उच्च भावभूमिपर प्रस्थापित किया है। शबरी राम के उज्ज्वल चरित्र की शुभ आभा से संपूर्ण होने के कारण रमणीय और स्मरणीय बन गई है, उसने रामायण के शीर्षस्थ, पात्रों एवं चरित्रों के दैदीप्यमान, दिव्यालोक में भी अपना सर्वोपरि उच्च स्थान एवं पहचान बनाये रखी है। जो एक ओर भक्तों के लिए प्रेरणा भूमि है तो दूसरी ओर साधकों के लिए साधना भूमि है। नरेश मेहता ने शबरी को श्रमशीला, धर्मानुष्ठान में तत्पर रहनेवाली तपस्विनी के रूप में चित्रित किया है।

नरेश मेहता की मानवीय दृष्टि ने ही शबरी को असाधारणत्व रूप में प्रस्तुत किया है कवि के शब्दों में "शबरी अपनी जन्मगत निम्नवर्गीयता को कर्म दृष्टि के द्वारा वैचारिक उर्ध्वता में परिणत करती है। यह आत्मिक या आध्यात्मिक संघर्ष, व्यक्ति के सन्दर्भ में मुझे आज भी प्रासंगिक लगता है।"¹ अछूतोद्धार और नारी जागरण दोनों भावों की अभिव्यक्ति शबरी के माध्यम से व्यक्त हुई है। कवि ने शबरी के माध्यम से वर्ण भेद एवं सम्प्रदाय को नकार दिया है। कवि का संदेश यही है कि जन्म गतनिम्नता को वैचारिक उच्चता तथा आत्मिक संघर्ष द्वारा उर्ध्वता दी जा सकती है। कवि के मौलिक चिन्तन जल से स्पर्श पाकर ही शबरी की साधारणता असाधारण में बदल गई है और वह आत्मिक संघर्ष करती हुई पावन और मंत्रपूज्य चरित्र बन गई है। आधुनिक युग में समानता और मानवता के सिद्धान्त को शबरी के माध्यम से व्यक्त किया है। "सामाजिक वर्ग, वर्ण तथा परिवेश की जड़ता से मुक्ति की प्रक्रिया जिस श्रमविधान के द्वारा चरितार्थ हो सकती है, शबरी के चरित्र में वही सामाजिक प्रयोजन मूर्त हुआ है।"²

शबरी काव्य में आज के युग के इस महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाया है। निम्नतम धरातल पर फेंका हुआ व्यक्ति भी अपनी अस्मिता जानकर अपने भीतर के प्रकाश को आलोकित कर सकता है। यदि लक्ष्यप्राप्ति उसका ध्येय है, तो वह महान से महान लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। मानव का ध्येय तक रुक जाना नहीं है, देह रूकी अर्थात् वह पशुतूल्य कर्म है—

"सब बन्धन से कहीं श्रेष्ठ / उस प्रभु का ही बन्धन
कुल-कुटुम्ब की चिंता से / अच्छा है प्रभु का आराधन।"³

शबरी एकनिष्ठ भक्ति के द्वारा महान बन जाती है कि प्रभु राम तक उसे शिवभक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। नरेश मेहता की शबरी को भी मातंग ऋषि के सामने अपने आने का उद्देश्य बतलाने के लिए हिचकिचाहट होती है—

"अन्तज्य अछुत, फिर शबरी जाति / उस पर स्त्री, क्या हेतु कहूँ ?
अध्यात्म-पिपासा लेकर मैं / आयी हूँ, कैसे बात कहूँ।"⁴

इस कथन पर मातंग ऋषि की दुविधा देखिए—

"स्थान यहाँ देना तुमको / इस का निर्णय सब पर निर्भर
यदि उच्च वर्ण की होती, तुम / तो प्रश्न, नहीं था कुछ दूभर।"⁵

वर्तमान समाज में भी अस्पृश्यों के लिए जलाशय की अलग व्यवस्था है। नरेश मेहता ने इसी बात को शबरी में भी दर्शाया है। सार्वजनिक जलाशयों में जानवर पानी पी सकते हैं किन्तु शूद्रों को पानी भरने



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

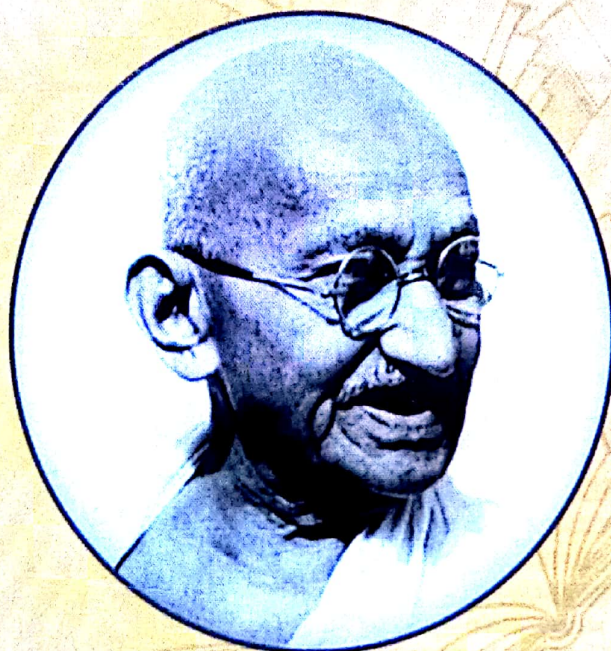
1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

Mahatma Gandhi's *Satya and Ahimsa*

Vithal B Gunde

Head & Assistant Professor

Dept. Of History, Kalikadevi Arts, Commerce and Science College
Shirur Kasar, Dist. Beed 413249

INTRODUCTION: This research paper makes an attempt to study the truth and non-violence philosophy of Mahatma Gandhi was an Indian revolutionary and religious leader who used his religious power for political and social reform. Although he held no governmental office, he was the main force behind the second-largest nation in the world's struggle for independence. Mohandas Karamchand Gandhi was born on October 2, 1869, in Porbandar, India, a seacoast town in the Kathiawar Peninsula north of Bombay, India. His wealthy family was from one of the higher castes. In September 1888 Gandhi went to England to study. Before leaving India, he promised his mother he would try not to eat meat. He was an even stricter vegetarian while away than he had been at home. In England he studied law but never completely adjusted to the English way of life.

He became a lawyer in 1891 and sailed for Bombay. He attempted unsuccessfully to practice law in Rajkot and Bombay, then for a brief period served as lawyer for the prince of Porbandar. In 1896 Gandhi returned to India to take his wife and sons to Africa and to inform his countrymen of the poor treatment of Indians there.

His vision also presents a more complex and realistic understanding, than some other contemporary pluralists, of political philosophy and of political life itself. In an increasingly multicultural world, political theory is presented with perhaps most vigorous challenge yet. The main problem of violence has also become coterminous with issues of pluralism, many have advocated the banishing of truth claims from politics altogether. Political theorists have struggled to confront this problem through a variety of conceptual lenses. Debates pertaining to the politics of multiculturalism, tolerance, or recognition have all been concerned with the question of pluralism as one of the most urgent facts of political life, in need of both theoretical and practical illumination.

TRUTH (*Satya*): The word *Satya* (Truth) is derived from Sat, which means 'being'. Nothing is or exists in reality except Truth. That is why Sat or Truth is perhaps the most important name of God. In fact it is more correct to say that Truth is God, than to say that *God is Truth*. But

as we cannot do without a ruler or a general, such names of God as 'King of kings' or 'The Almighty' are and will remain generally current. On deeper thinking, however, it will be realized, that Sat or Satya is the only correct and fully significant name for God. And where there is Truth, there also is knowledge which is true. Where there is no Truth, there can be no true Knowledge. That is why the word Chit or Knowledge is associated with the name of God. And where there is true Knowledge, there is always Bliss (*Ananda*). Their sorrow has no place. And even as Truth is eternal, so is the Bliss derived from it. Hence we know God as *Sat-Chit Ananda*, One who combines in Himself Truth, Knowledge and Bliss.

Devotion to this Truth is the sole justification for our existence. All our activities should be centered in Truth. Truth should be the very breath of our life. When once this stage in the pilgrim's progress is reached, all other rules of correct living will come without effort, and obedience to them will be instinctive. But without Truth it is impossible to observe any principles or rules in life. Generally speaking, observation of the law of Truth is understood merely to mean that we must speak the truth. But we in the Ashram should understand the word Satya or Truth in a much wider sense. There should be Truth in thought, Truth in speech, and Truth in action. To the man who has realized this Truth in its fullness, nothing else remains to be known, because all knowledge is necessarily included in it. What is not included in it is not Truth, and so not true knowledge; and there can be no inward peace without true knowledge.

If we once learn how to apply this never-failing test of Truth, we will at once be able to find out what is worth doing, what is worth seeing, what is worth reading. But how is one to realize this Truth, which may be likened to the philosopher's stone or the cow of plenty? By single-minded devotion (*abhyasa*) and indifference to all other interests in life (*vairagya*)—replies the *Bhagavad-gita*. In spite, however, of such devotion, what may appear as truth to one person will often appear as untruth to another person. But that need not worry the seeker. Where there is honest effort, it will be realized that what appear to be different truths are like the countless and apparently different leaves of the same tree. Does not God Himself appear to different individuals in different aspects? Still we know that He is one. But Truth is the right designation of God. Hence there is nothing wrong in every man following Truth according to his lights. Indeed it is his duty to do so.

Then if there is a mistake on the part of anyone so following Truth, it will be automatically set right. For the quest of Truth involves *tapas*—self-suffering, sometimes even unto death. There can be no

place in it for even a trace of self-interest. In such selfless search for Truth nobody can lose his bearings for long. Directly he takes to the wrong path he stumbles, and is thus redirected to the right path. Therefore the pursuit of Truth is true *bhakti* (devotion). It is the path that leads to God. There is no place in it for cowardice, no place for defeat. It is the talisman by which death itself becomes the portal to life eternal. Gandhi was not an academic philosopher, nor did he exhibit any interest in logical and epistemological problems. However, his Autobiography, the Story of My Experiment with Truth shows that he considers himself as a seeker of truth and is ready to share his experiences with others but claiming no finality for his own conclusions.

NON-VIOLENCE (AHIMSA): With regard to the etymological origin of the word, the term *ahimsa* is formed by adding the negative prefix *a* to the word *himsa* which is derived from the Sanskrit root '*han*', i.e. 'to kill', 'to harm', or 'to injure', and means not killing, not harming, not injuring. The commonly used English equivalent 'non-violence' is inadequate as it seems to give a false impression that *ahimsa* is just a negative virtue. *Ahimsa* is not mere abstention from the use of force, not just abstention from killing and injuring. It also implies the positive virtues of compassion and benevolence because not killing and not injuring a living being implicitly amounts to protecting and preserving it and treating it with mercy.

The *ahimsa* is an important spiritual doctrine shared by **Buddhism**, **Jainism** and **Hinduism**. In the said religions, this doctrine has a much wider spiritual connotation and forms an integral aspect of their principles, philosophies and practices. For over three thousand years, nonviolence was considered the highest virtue or the virtue of virtues in the ascetic traditions of ancient India. It is noteworthy to mention that the practice of nonviolence was not a mere theory, most especially for the people in ancient India who made freedom their primary aim and for those enlightened minds that focused upon spiritual practices, according to Jayaram.

The Buddha practiced it and actively applied it to resolve differences among rulers of his times and to prevent wars. He advised people to practice right living on the Eightfold Path and to avoid hurting or harming others. He preached against cruelty. The Jains practiced extreme forms of nonviolence as they did not want to injure even the minutest organisms. They made it part of their vows. The Hindus practiced nonviolence toward all by refraining from hurtful thoughts, words and actions.

Gandhi discovered a new law- the law of love, a new philosophy- the philosophy of non-violence. Non-violence is the law of human

spirit. Since the practice of ahimsa requires an inner strength, which can only be generated by living faith in God. In his own words, "Non-violence is the first article of my faith. It is also the last article of my creed. "Here one can say that, faith in God is the basis of *ahimsa*. Where there is love there is peace, and where there is peace there is God (Truth). Thus, a sincere faith in God will make man see that all human beings are fellow-beings and essentially one. There is no question of doubt that the love of God would turn into a love of humanity, which alone make possible the exercise of non-violence. As a matter of fact, non-violence is the outcome of the realization of the unity of mankind that one will be able to love his fellow-beings. One who utilizes the law of love creates wonders as the force of ahimsa is higher and subtler than the forces of Nature. You could not see it, but only imagine it. Gandhi considers non-violence is the greatest and most powerful device in the world.

Gandhi believes that it's manifestation in humanity is strengthened by ahimsa: thus ahimsa - also called truth, love or God - is the core of human life and the divine supreme law that guide humanity at all cost. God or the Supreme Being, who is the Creator of all and called by different names, is the power behind the above unity; for Gandhi, He is also the 'Truth' and it is His voice within everyone that inspires to follow the vision of Truth, and that is possible only by complete realization of ahimsa-the nonviolence. Gandhi has deep faith with non-violence. He understands non-violence as the most active force in the world as well as supreme law. This particular type of belief of Gandhi is expressed in his oft-quoted statement that Ahimsa is natural to man. Gandhi explains this in different ways. If we survey the history of human evolution we shall find that although in opening stage brute force appeared to be dominant, the progress of evolution towards non-violence. Gandhi said, "If we turn our eyes to the time of which history has any record down to our time, we shall find that man has been steadily progressing towards ahimsa."

Satya and Ahimsa in Present Scenario : Mahatma Gandhi holds an eminent position in the history of ethics and their application to contemporary concerns. Mahatma Gandhi is considered to be one of the greatest sons of India. As a man of action, he practiced what is moral, truthful and non-violence after thorough examination of those values. The entire gamut of his philosophical thought is based on two moral cardinal values, namely, truth, non-violence which are more relevant today than before. Gandhian philosophy has always been a topic of discussion especially in this contemporary world where his ideas appear redundant amidst the pragmatism and materialism which prevails....still to discard the relevance of his thought is akin to

removing the element of humanity from man as his philosophies like "satya" and "ahimsa" emanate basic human principles of love, compassion and tolerance.

In this fast globalizing world where capitalism is gradually becoming the word of the day, Gandhi's concept of decentralization of means and resources and his model of economic development which talked of developing villages as an independent production and administrative unit has become more relevant in order to save us from various economic, social, ethical and emotional hazards which are the consequence of this large scale industrialization and have become silent killers of the human race. In Gandhi's words "truth and untruth often co-exist, good and evil are often found together" however when two lies wage a war against each other it's the bigger lie that wins the greater violence that takes away the booty the more intense hatred that becomes the victor but ultimately its untruth that prevails, violence that persists and hatred that is glorified the vedantic philosophy of "asto ma sadgamay" subjugates to the engulfing darkness. It's here when Gandhi's Weapon of "satyagraha", and "ahimsa" come into play and helps in restoring the light to the darkening world.

Reference Book:-

1. Prof. J. S. Mathur, Contemporary Society: A Gandhian Appraisal, Gyan Publishing House, New Delhi, 2010.
2. Mahadev Desai, the Story of My Experiment with Truth, Navajivan Publishing House, Ahmadabad.
3. Joy Kachappilly, Gandhi and Truth: An Approach to the Theology of Religions, Akansha Publishing House, New Delhi, 2000.
4. Gaur, V.P. Mahatma Gandhi: A study of his message of non-violence. New Delhi: Starling Publisher's pvt. Ltd, 1977.
5. Bose. N.K, "Studies in Gandhism", Navajivan publishing house, Ahmadabad. 1972.
6. M. K. Gandhi, Non-violence in Peace and War, Vol. I, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1949.
7. K. T. Char Narasimha, ed., a Day Book of Thoughts from Mahatma Gandhi, Macmillan and Co. Limited, Calcutta, 1951.
8. Gandhi, M.K. (1991), *An Autobiography or the Story of My Experiments with Truth*, Ahmedabad: Navjivan Mudranaly.

Website

<http://www.wikipedia.co.in>



**Analytical Study of Settlements With Respect to Physical Factor
in Beed District****Dr. Sanjay R. Sawate**Head Dept. of Geography, Kalikadevi
Arts Commerce & Science. College, Shirur Kasar
Tq. Shirur Kasar, Dist. Beed.**Abstract:**

Settlement is a generic term and is derived from the word "Settle". According to the pocket oxford dictionary (1966) the meaning of the word "Settle" is to establish or become established in more or less permanent abode or way of life. To understand spatial distribution of settlements with respect to Relief, Slope, Drainage, Rainfall, soil type, Roadways and Railways in the study region.

Keywords: Settlement, Relief, Slope, Drainage Soil, Roadways etc.

Introduction:

Settlement Geography holds an exceptional place in the geographical hierarchy of human phenomena. It is a relatively recent sprout from the venerable trunk of human geography. Its consideration runs like a thread through almost the whole fabric of geographic thought. The settlement is central to human geography, modifying as it does the natural environment by introducing cultural element.

Settlement is a generic term and is derived from the word "Settle". According to the pocket oxford dictionary (1966) the meaning of the word "Settle" is to establish or become established in more or less permanent abode or way of life. It also includes temporary stay at a place. Settlement geography is the study of the cultural landscape. It is a science of systematic inquiry of occupancy features distributed over space with differentiation in relation to man. The minutest detail of the distribution of population manifests itself in the form of grouping of houses scattered at places and agglomerated at others.

Houses and streets being the chief elements of occupancy unit that results according to function become the focal point of the study in settlement geography and determine the external and internal form of the habitation. Thus, the functions determine the form. The external forms of these occupancy units reflect architectural styles of the time, culture and region from which they spring. The gradual modification in the external form of the occupancy last indicates the qualitative and quantitative changes in the settlement. Settlement as an occupancy unit represents, thus, an organized colony of human beings, including the buildings in which they live or work or store or use them otherwise and the tracks or streets over which their movements take place. In the initial stages these habitations totally depend upon the surrounding conditions. Then gradually they change with the advancement of knowledge and civilization. "Settlement geography is not only related with buildings grouped around the permanent farm dwelling, but also with the temporary camp of the hunter or herder, or with Settlement clusters or agglomerations, running the scale from hamlet to village, town and city.

Study Area:

Beed district is established with the Maharashtra state in 1960. Beed district is located central in Maharashtra state. Beed district is a part of Marathwada region. Beed district is selected as the region for present study. Beed district lies between 18⁰28' and 19⁰27' north latitudes and 74⁰54' east

to 76°57' east longitudes. It is surrounded by Aurangabad and Jalna district to the north, Parbahani district to the north-east, Latur district to the south-east and Osmanabad district to the west. It has an area of 10693 sq.km. The total population of the study region is 2585962 in 2011. The district is divided into two revenue divisions i.e. Beed and Ambajogai. The district ranks 10th in Maharashtra and 2nd in Marathwada in respect of area. According to 2011 census there were 1369 village in the Beed district. Out of the total villages 13 villages are inhabited. The district ranks 29th in the state in terms of population.

Objectives:

The main objective of the present study is to understand spatial distribution of settlements with respect to Relief, Slope, Drainage, Rainfall, soil type, Roadways and Railways in the study region. In it I used 2011 census data of settlements, toposheets for Relief and Slope analysis I used contour and settlements from toposheet. In case of Drainage, Roadways and Railways I put buffer with respect to distance with the help of toposheet. To know the soil influence researcher used district planning map of soil and toposheet for settlements.

Database

I used in this study secondary data. The data regarding population area and number of rural settlements have been obtained from district census book of Beed.

Discussion

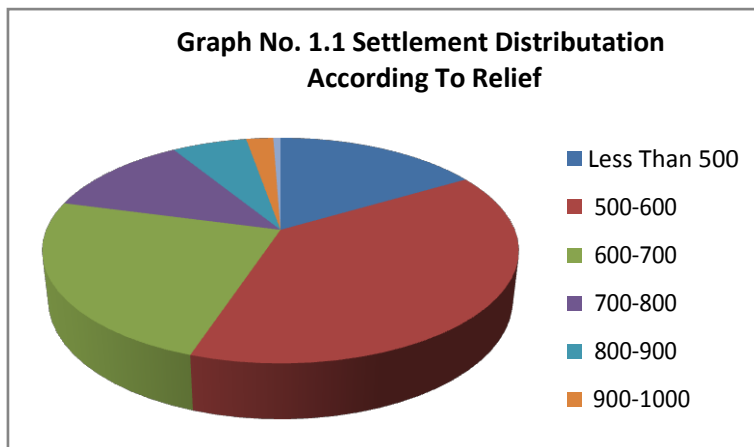
The study of spatial distribution of settlements has long occupied geographers. The where? And why where? Constitute disarmingly simple, yet extremely complicated questions which can be asked about all manner of phenomena. The purpose here is to apply such questions to a single phenomenon- settlement. It involves the description and analysis of human habitat over area.

It is observed that most of civilization (settlements) mainly influenced by Paleo-geographic or environmental factors in old and new era but these days social and economic factors play an important role in the spatial distribution of settlements.

Table No. 1.1 - Settlement Distribution According to Relief in Beed District

Sr. No.	Elevation in Meter	No. Of Villages	Percentage To Villages
1	Less Than 50	227	16.59
2	500-600	528	38.59
3	600-700	328	23.97
4	700-800	165	12.06
5	800-900	83	6.06
6	900-1000	30	2.19
7	Above 1000	08	0.51
	Total	1369	100

Source: Compiled By the Researcher



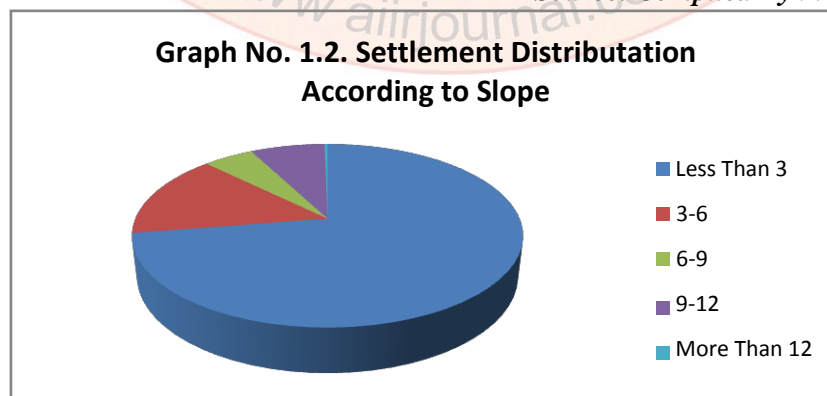
The relief is a function of the Geo-technique constructive and destructive process provides clue towards estimating the intensity of forces at work (Singh 1980). Here it can be analyzed in terms of discrepancies between distributional zones. One can briefly understand the physiography of study region. It found that this region divided into three parts they are.

- i) The Plains or Basins: - In it Ashti, Kaij and Ambajogai tahsils south part are merged.
- ii) The Plateau: - Tahsils like Shirur, Patoda, Georai, Majalgaon, upper Beed, Dharur and Wadwani north part, north part of Kaij and Ambajogailies in it.
- iii) Hilly region: - Ashti, Patoda, south part of Beed, Kaij and Ambajogai hold this situation which is a part of Balaghat. In the study region lower height is 305 meter and the highest pick height is 2200 meter. Generally it is observed that 55.15% settlements are distributed less than 600 meters. In between 600 to 900 meters there are 42.09 % settlements found and above 900 meters 2.7% settlements are located in study region.

Table No. 1.2 - Settlement Distribution According to Slope in Beed District

Sr. No.	Slope (Degree)	No Of Settlement	Percentage To Village
1	Less Than 03	992	72.51
2	03-06	204	14.91
3	06-09	68	04.97
4	09-12	101	07.38
5	More Than 12	04	02.19
6	Total	1369	100

Source: Compiled By the Researcher



A slope may be formed by a covering of weathered rock resting on bedrock. Another type of slope consists of bed rock forming the basal slope, covered by a weathered rock, often including a surface layer of the soil. (P. C.Panda 1990) the slope loss or gain in altitude per horizontal distance in a direction of any segmental elements of the earth surface with the datum, expresses in degree is a function of multiple processes. Slope of an area is the most important controlling factor for settlements.

The slope table of the study region is divided into five group. Each group contain uniform class interval of 3 except the highestgroup. The lower slope group i.e. 00 – 3covers 72.51% settlements, second group 3 - 6 covers 14.91% settlements, third group 6 – 9 covers 4.97% settlements, fourth group which lies between 9 – 12 hold 7.38% settlements and last group which is above 12 acquire 2.19 % settlements. The correlation value for slope of whole district is -0.79 it shows strong negative correlation i.e. increases the slope decrease the settlements. In Ashti (-0.81), Ambajogai (-0.78), Patoda (-0.77), Beed and Kaij (-0.76) and Dharur (-0.75) tahsils show strong negative correlation. On the other hand Parali (-0.73), Majalgaon (-0.72), Georai and Wadwani (-0.71) and Shirur (K) (-0.69) tahsils are very closer to strong negative correlation value (-0.75). If one can sum up all the above explanation, it is found that most of settlements are distributed in the lower slope angle in the entire study region.

Conclusion

In the study region lower height is 305 meter and the highest pick height is 2200 meter. Generally it is observed that 55.15 percent settlements are distributed less than 600 meters. Most of settlements are distributed in the lower slope angle in the entire study region. 47.22 percent settlements found in region.

References

1. Jog S. R. and Saptashi P. G. (1980), "SankhikeeBhoogol", NarendraPrakashan, Pune
2. KarlekarShrikant and Kale Mohan (2006), "Statistic al Analysis of Geographical Data", Diamond Publications, Pune
3. JadhavJaiprakash A (2010), "Impact on Tarrian on The pattern and Growth of Settlements in Walki River Catchment", Unpublished Ph.D.Thesis, Tilak Maharashtra Vidyapeeth, Pune
4. KumbharArjun (1997) "Rural Habitat", Published Ph.D Thesis Shivaji University, Kolhapur SumerooPrakashan, Thane
5. KulkarniSuyogPrakash (2004), "Distribution of settlements in North Ahmadnagar District: A Geographical Analysis", Unpublished M .A. Dissertation, Pune University.
6. Pawar N.V. (2006), "Geographical Analysis of Rural Settlements in Beed District", Unpublished Ph.D. Thesis Dr. B..A. M. University, Aurangabad.



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

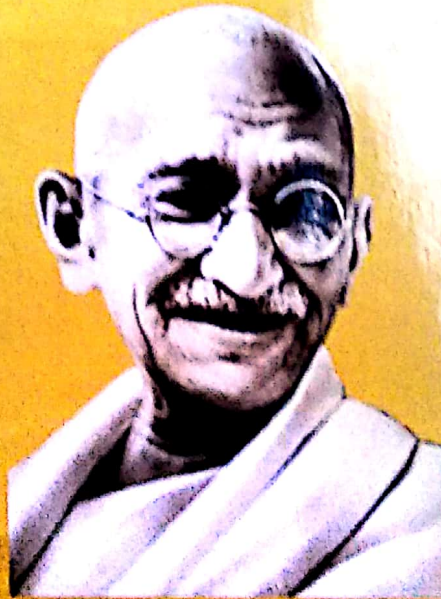
1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

5.

महात्मा गांधीचे ऐच्छिक साधेपणा याविषयीचे विचार

डॉ.सुधीर आ. येवले

संशोधन मार्गदर्शक व समाजशास्त्र विभाग प्रमुख,
कालिकादेवी महाविद्यालय, शिरूर (का) जि. बीड

महात्मा गांधी यांचे योगदान केवळ स्वतंत्र्य लढण्यापुरतेच मर्यादित नाही. त्यांनी समाजाचा सर्वांगीण विचार केल्याचे त्यांच्या विविध विचारावरून लक्षात येते. महात्मा गांधींचे ऐच्छिक साधेपणा, सभ्यता, जगण्याचा हेतु, अर्थव्यवस्था, यांत्रिकीकरण, औदयोगिकीकरण, ग्रामउदयोग, विकेंद्रीकरण, स्वदेशी, पर्यावरण, आरोग्य, इत्यादीविषयीचे विचार त्यांनी आपल्या समाजाविषयीच्या विचारात मांडले. त्यांना केवळ स्वातंत्र्यता, स्वराज्यातच रस नव्हता तर, समाजाच्या संपूर्ण विकासात त्यांना रस होता. त्यांच्या वरील विचारावरून हे दिसून येते. भारताचा इतिहास, तत्त्वज्ञान, परंपरा, या अन्य देशापेक्षा वेगळ्या असल्याने भारताचा प्रवास जगाच्या वाटेवरून होऊ शकत नाही. असे त्यांना वाटते.

महात्मा गांधी हे आधुनिक सभ्यतेला विरोध करतात. तो तिच्या अनैतिकेमुळे. सभ्यतेची व्याख्या करताना म. गांधी म्हणतात, "सभ्यता म्हणजे मनुष्याला कर्तव्याचा मार्ग दाखविणारी वागणूकीची पध्दत. कर्तव्य बजावणे म्हणजे नितीचे पालन करणे, नितीचे पालन करणे म्हणजे आपल्या मन, इंद्रियांना ताब्यात ठेवणे असे केल्याने आपण स्वतः ला ओळखतो." पाश्चात्य सभ्यता ही म. गांधींच्या निकषानुसार कुधारणाच ठरते. हिंदी संस्कृतीचा रोख निती दृढ करण्याकडे आहे. तर पाश्चिमात्य संस्कृतीचा रोख अनिती दृढ करण्याकडे आहे. म्हणून महात्मा गांधी तिला कुधारणा म्हणतात. महात्मा गांधींच्या मते, अनिती दृढ करणे म्हणजे मन, इंद्रियांना ताब्यात न ठेवता मोक्यात सोडणे असा होतो. यालाच उपभोगवाद किंवा चंगळवाद म्हटले जाते. सभ्यताची जगाची जीवनशैली ती उपभोगवादी किंवा चंगळवादी आहे. मानव सतत नवनवीन वस्तूंच्या उपभोगाकरीता शोध लावत असतो. संपूर्ण बुद्धीमत्ता नाविष्य करिता वापरू लागला आहे. तसेच संशोधनाकरिता वापरू लागला. यातून सभ्यतेत वाढ होऊ लागली आहे. सभ्यता म्हणजेच सिव्हिलायजेशन होय. सभ्यतेत राहणीमान, भौतिक वस्तू या बाबी येतात. या बाबी वरवरच्या म्हणजे भौतिक संस्कृति होय तर आपण सत्यप्रिय, सदाचारी, न्यायप्रिय असाल तर आपण सुसंस्कृत आहोत. म्हणजे सभ्य माणूस किंवा समाज हा सुसंस्कृत असेलच असे नाही. पाश्चात्य संस्कृती ही त्याच्या सुसंस्कृतीत वाढ करेलच असे नाही. हिंद स्वराज्यमध्ये म. गांधी लिहीतात की, "या सभ्यतेची खरी ओळख अशी की, लोक बाह्य वस्तूंच्या शोधात आणि शरीर

Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

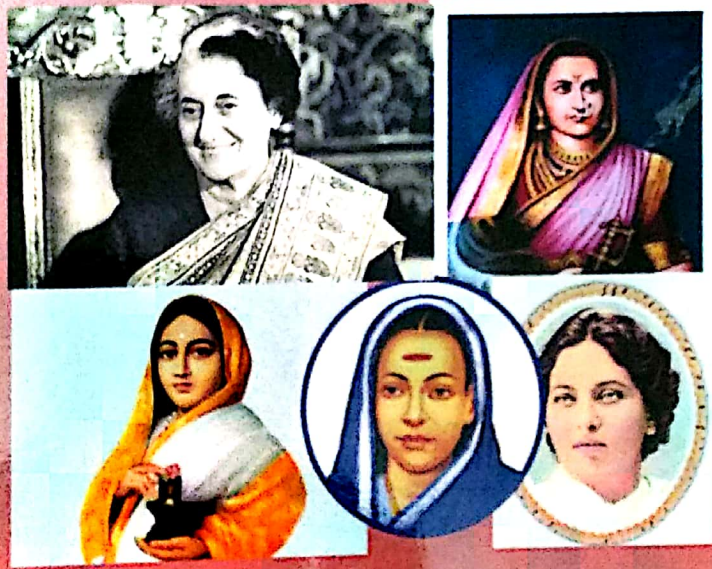
UGC Approved Multidisciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Vol (I)

12 January 2019 Special Issue – 68

महिला अबलीकरणाच्या समस्या : आव्हाने आणि उपाय



Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue
Prof. A.R. Bhosle
Assist. Prof. Head of Dept. Sociology
Vasant Mahavidalaya , Kaij, Dist. Beed

Dr. S.K. Gaikar
Assist. Prof. Dept. of Sociology
Vasant Mahavidalaya , Kaij, Dist. Beed

SWATIDHAN PUBLICATION
Visit to - www.researchjourney.net





महिला सबलीकरण संकल्पनात्मक चौकट

डॉ. सुधीर आ. येवले

सहा. प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, कालिका देवी महाविद्यालय, शिरूर (का.)

प्रास्ताविक :

पारंपरिक पुरुषप्रधान भारतीय समाजात महिलांना अबला समजण्यात येई. त्यांना कौटुंबिक, सामाजिक तसेच राजकीय क्षेत्रातील सत्तेपासून वंचित ठेवले जाई. राजकीय सत्ता ही दुसऱ्या ठिकाणच्या सत्तेचा स्रोत असते. म्हणूनच 73 व्या घटना दुरुस्तीने महिलांना सबल बनविण्याकरिता पंचायतराज व्यवस्थेत जाणीवपूर्वक 33% आरक्षण देऊन त्यांना सत्तेत सामील करून घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. पण, 33% आरक्षण दिल्यामुळे खरेच महिलांचे सबलीकरण होऊ शकते का ? हे तपासून पाहणे अगत्याचे वाटले. म्हणून तसा प्रयत्न प्रस्तुत प्रकरणात केला आहे. त्याकरिता सबलीकरण ही संकल्पना सविस्तर स्पष्ट करून, सबलीकरणाचे मापदंड किंवा निकष लक्षात घेऊन पंचायतराज व्यवस्थेतील ग्रामपंचायतीचे नेतृत्व करणाऱ्या महिला सरपंचांचे कितपत सबलीकरण झाले आहे? तसेच समाजातील अन्य महिलांच्या सबलीकरणासाठी महिला सरपंच कितपत प्रयत्नशील आहेत? याचा शोध घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. एखादा बदल जाणून घेताना त्याची पूर्वपीठीका जाणून घेणे अगत्याचे असते म्हणून भारतीय महिलांच्या सामाजिक दर्जा विषयक पार्श्वभूमीचाही वेध घेण्यात आला आहे. सध्या महिलांना पंचायतराज व्यवस्थेत 50 टक्के आरक्षण आहे.

सबलीकरण संकल्पना :

मनुष्य जेव्हा शक्तिहीन असतो तेव्हा तो दुर्बल बनतो. दुर्बल व्यक्ती सत्ता आणि अधिकार या पासून वंचित असते किंवा वंचित राहते, किंवा तिला तसे ठेवले जाते. अशा व्यक्तीला म्हणजेच शक्तिहीनाला ताकद देणारी, सत्ताहीनाला सत्ता आणि अधिकार प्रदान करणारी म्हणजेच दुर्बलांना ताकद, सत्ता आणि अधिकार मिळवून देऊन त्यांना बलवान बनण्यास, सबल होण्यास मदत करणारी प्रक्रिया म्हणजे सबलीकरणाची प्रक्रिया होय. थोडक्यात, व्यक्तीला ताकद, सत्ता आणि अधिकार प्रदान करून देणारी प्रक्रिया म्हणजे सबलीकरणाची प्रक्रिया होय.

सबलीकरणामुळे सत्ताहीन आणि अधिकारशून्य व्यक्तींना त्यांच्या स्वतःच्या जीवनावर ताबा मिळविता येतो. त्यांना स्वामीत्व प्राप्त होऊ शकते. त्यामुळे भौतिक मालमत्ता आणि संपत्ती, बौद्धिक साधने आणि विचारसरणी (Ideology) यावर अधिकार मिळविता येतो. यातूनच व्यक्तीची सामर्थ्याच्या दिशेने, सामर्थ्यासह, सामर्थ्याजवळ (Power to, Power with, Power within) अशी वाटचाल सुरु होते. अमर्त्य सेन यांनी घमानवी सामर्थ्य (Human Capabilities) या बदल अत्यंत स्पष्ट विचार मांडले आहेत. मार्था नुसबाम यांनी या विचारांच्या आधारे मानवाला सबल बनवू शकणाऱ्या, त्याला सामर्थ्यवान बनवू शकणाऱ्या अशा निवडक क्षमतांची यादी सादर केली आहे --

- * सामान्य आयुष्य जगण्याची क्षमता ;
- * शारीरिक अबाधिततेची क्षमता ;
- * कल्पना-शक्ती आणि विचार-शक्तीचे सामर्थ्य ;
- * भावनांवर ताबा मिळविण्याची, भावनांचा विकास साधण्याची क्षमता ;
- * व्यवहारिक विचारसरणीचे सामर्थ्य ;
- * इतरांबरोबर आणि इतरांप्रीत्यर्थ संबंध प्रस्थापित करण्याची क्षमता ;
- * निसर्ग आणि अन्य प्राणिमात्रांबद्दल आपुलकी असण्याची क्षमता ;
- * आयुष्य खेळकरपणे आणि मजेत जगण्याची क्षमता ;
- * भौतिक आणि राजकीय पर्यावरणावर, या दोहोंवर ताबा मिळविण्याची क्षमता.

अन्य काहींच्या मते सबलीकरण ही एक अशी प्रक्रिया आहे की, ज्यामध्ये सावधानता, माहितीपूर्णता, क्षमताधिष्ठितता यांचा समावेश होतो. परिणामस्वरूप ग्रहणशक्ती, वाढीव सहभाग, प्रभावी निर्णयक्षमता, परिवर्तनीय कृतिशीलता यांचाही समावेश होतो. यामध्ये हवे ते प्राप्त करण्याची आणि आपल्या हितसंबंधांच्या संदर्भात इतरांवर प्रभाव पाडण्याची क्षमता, या गोष्टीही अंतर्भूत होत असतात.

सबलीकरणाची व्याख्या करताना बीना आगरवाल म्हणतात की, सत्ताहीनांना किंवा वंचित घटकांना आर्थिक, सामाजिक आणि राजकीय दृष्ट्या दुय्यम स्थानावर ठेवणारी सत्ता संबंध वाढविण्याची प्रक्रिया म्हणजे सबलीकरण होय.

सबलीकरण ही प्रक्रिया विविध संधींवर आणि घटकांवर आधारीत असते. हे घटक म्हणजे * ज्ञानात सुधारणा ; * विविध कौशल्यांचा विकास करणे आणि * एखाद्याचा समाजातील दर्जा सुधारणे हे होत. त्यामुळे सबलीकरण ही प्रक्रिया दीर्घकालीन आणि वेळखाऊ समजली जाते. सबलीकरण या संकल्पनेत सत्ताप्राप्ती सुलभ करणे आणि अशी सत्ता निर्माण करणे की, जी इतरांना प्रेरणा देऊन त्यांच्यातील पात्रतांचा आणि सामर्थ्यांचा व्यक्तींकडून किंवा समुहाकडून उपयोग करून घेऊन विकास करू शकेल हे अभिप्रेत आहे.

महिला सबलीकरण :

महिलांच्या सबलीकरणाचा विचार करताना असे आढळून येते की, त्यांच्या जवळही पुरुषांप्रमाणेच इच्छाशक्ती, इच्छा आकांक्षांवर ताबा ठेवण्याची क्षमता आणि निर्णय क्षमताही असते. परंतु त्यांच्या बाबतीत सामाजिक पाठिंब्याची उणीव आणि न्यूनता आढळून येते. संधी दिली तर त्याही पुरुषा इतक्याच कार्यक्षम आणि बलशाली बनू शकतात. त्यासाठी * पुरेसा सकस आहार ; * शैक्षणिक आणि सामाजिक

स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि ग्राम विकासाच्या सह संबंधाचा अभ्यास

प्रा. बी.टी. पवार

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख

कालिकादेवी कला, याणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,

शिरूर कासार जि.बीड

डॉ.काकासाहेब पोकरळे

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख

सौ.के.एस.के.महाविद्यालय,बीड.

प्रस्तावना :

प्राचीन काळापासून ते आज पर्यंत भारतीय जनते संबंधी कल्याणकारी विचार करणारी व्यवस्था म्हणून स्थानिक स्वशासनाकडे पाहिले जाते. स्थानिक स्वशासन संस्था जनतेच्या कल्याणाचे धोरण ठरवितात.त्या धोरणानुसार कार्यक्रम तयार करतात.ते कार्यक्रम जनतेच्या कल्याणासाठी अमलात आणतात.

सुशासन व्यवस्था निर्मितीचे बीज अंकुरण्याचे कार्य स्थानिक स्वशासन संस्था करता.या संस्था लोकशाही राष्ट्राची निर्मिती करतात.त्या खऱ्या लोकशाही शासन व्यवस्थेची पायाभरणी करण्याचे कार्य अत्यंत कुशलतेने करतात.कोणत्याही देशात कोणतीही शासन व्यवस्था अथवा राजवट भागविता येत नाहीत.स्थानिक जनतेच्या नागरी गरजा भागविण्यासाठी स्थानिक स्वशासन संस्थांची मदत घ्यावीच लागते.स्थानिक स्वशासनाचा कारभार काहिसा गुंतागुंतीचा असतो.कोणत्याही देशामध्ये अशा संस्थांची फारच मोठी अशी यंत्रणा असते.अशा संस्थांचे जाळे देशभर पसरलेले असते.

लोकशाही प्रधान देशात अनेक महत्त्वाची कार्ये या संस्थांकडून पार पाडली जातात.स्थानिक जनतेत स्वातंत्र्याचे नव चैतन्य निर्माण करण्याचे महान कार्य या संस्था करतात.नव नेतृत्वाची निर्मिती या संस्थांच्या माध्यमाद्वारे होत असते.स्थानिक नेतृत्वातूनच राष्ट्रीय नेतृत्व निर्माण होत असते.

स्थानिक कारभार सुरळीत चालविण्यासाठी एक अपरिहार्य यंत्रणा म्हणून स्थानिक स्वशासन संस्थांकडे बघितले जाते.केंद्रशासन अथवा राज्य शासनाचा एक अविभाज्य घटक म्हणून या संस्था अस्तित्वात आलेल्या आहेत.

कोणत्याही देशात काही विषय हे नागरीकांच्या जीवनाशी अत्यंत निगडीत असतात.त्या विषयांचा कारभार भौगोलिक व ऐतिहासिक दृष्टिकोनातून स्थानिक स्वशासन संस्थांचा पाहतात असे निरनिराळ्या देशातील अनुभवावरून सांगता येते.स्थानिक स्वरूपाची कार्ये करण्यासाठी त्या विशिष्ट स्थानिक क्षेत्रापुरती मर्यादित सत्ता किंवा अधिकार अशा संस्थाना मिळतात सर्व देशभर केंद्र सरकारची सत्ता असते.राज्यात राज्य सरकारची सत्ता असते.स्थानिक क्षेत्रापुरती स्थानिक शासनाची सत्ता असते.लोकसत्ता करण्यात लोकांच्या कल्याणकारी लोकांना सहभागी होण्यासाठी स्वशासनाची ही यंत्रणा उभारली जाते अशी यंत्रणा उभारण्यासाठी लोकप्रिय अशा निवडणुकीचे तत्व अंगीकारले जाते.सत्तेच्या विकेंद्रीकरणे अशा संस्थाना बळकटी आणली जाते.

जनतेचे सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, विकास घडवून आणण्यासाठी या संस्था ग्रामीण समुदायाचा विकासाच्या कार्यात हातभार लावतात. स्थानिक जनतेला सेवा पुरवणे इत्यादी कार्ये स्थानिक स्वराज्य संस्था करतात.आर.एम.जॅक्सनने म्हटल्याप्रमाणे "नेहमीसाठीच स्थानिक शासन हे राष्ट्रीय शासनाचा आधार असते." स्थानिक स्वशासनाने अनेक राष्ट्रातून नवनवीन विचार प्रवाह जन्म दिला.अनेक देशातील जनतेच्या पारंपरिक जीवनावरील घट्ट पकड सैल करण्याचे कार्य या संस्थानी केले आहे.

स्थानिक स्वशासन संस्थांचे ग्रामीण जीवनावर फार मोठे परिणाम होतात.ग्रामीण जनतेचे जीवन सुखी करण्यासाठी व समृद्ध बनविण्यासाठी आधुनिक भारतातील प्रयोग महत्वपूर्ण आहेत. यालाच आपण पंचायत राज असे नाव देतो यालाच लोकशाही विकेंद्रीकरण असे म्हणतो यालाच सत्तेचे विकेंद्रीकरण असेही संबोधतात ग्रामीण क्षेत्रातील सामान्या जनतेच्या विकासासाठी एक नाविण्यपूर्ण यंत्रणा उभारणी गेली आहे. या यंत्रणाद्वारे कार्ये आणि जबाबदाऱ्या वाढविण्यात आल्या आहेत.या यंत्रणांच्या अधिकार कशाही रुंदावल्या गेल्या आहेत. जनतेच्या अपेक्षाही वाढल्या आहेत. त्यासाठी प्रशासकीय यंत्रणा ही विस्तारली आहे.जनतेप्रीती असलेल्या उत्तरदायित्वालाही महत्व आले आहे.सामान्य जनतेच्या आशाकांक्षांची पूर्तता करण्यामध्ये व त्यांचा उत्कर्ष करण्यामध्ये संस्थाना महत्त्वाचे योगदान द्यावे लागणार आहे.पंचायत राज संस्थाद्वारे जोमाने विकास साधण्याचे कार्य देशाने हाती घेतले आहे.

स्थानिक स्वशासन संस्थांचा एकूण कार्यभाग पाहता त्यांच्या अभ्यासाला तेवढे महत्त्व दिले जात नाही.काळाची गरज म्हणून तरी या विषयांच्या अभ्यासाला शासन दरबारी सर्वच योग्य असे स्थान दिले पाहिजे.थोड्या बहुत संस्था या विषयांच्या अभ्यासाकडे अनेक वर्षांपासून लक्ष देत असल्यातरी त्यांचे प्रयत्न तुज पुजे पडतात.

गृहितके :

1. ग्रामीण भारतातील राजकीय स्थिती सुधारण्यासाठी उपयोगी आहे.
2. आर्थिक स्थिती सुधारण्यासाठी यांची आवश्यकता आहे.
3. आरोग्यासाठी पुरक आहे.
4. सामाजिक बांधणी निर्माण होईल.
5. शैक्षणिक सुधारणा होतील.

उद्दिष्टे :

१. ग्रामीण भारतांच्या राजकीय स्थितीचा अभ्यास करणे.
२. ग्रामीण जनतेची आर्थिक स्थिती अभ्यासणे.
३. ग्रामीण जीवन शैलीचा अभ्यास करणे.
४. आरोग्यासाठी दिलेल्या सुविधांचा अभ्यास करणे.
५. शैक्षणिक कार्याचा समाजांच्या प्रगतीसाठी उपयोग होतो काय? हे अभ्यासणे.
६. मागासवर्गीय समाजाचा विकास होईल काय याचा अभ्यास करणे.

संशोधन पध्दती :

स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि ग्राम विकासाच्या सह संबंधाचा अभ्यास. या संशोधनासाठी मी वर्णनात्मक संशोधन पध्दतीचा उपयोग केला आहे.

भारतातील स्थानिक स्वशासनाचा इतिहास :

भारतातील स्थानिक स्वशासन संस्थांचा इतिहास अत्यंत प्राचीन व वैभव संपन्न असा आहे. या संस्थांचे अस्तित्व वैदिक अस्तित्व वैदिक काळापासून आहे. वेद, पुराण, उपनिषद, धर्मग्रंथ, स्मृती, श्रुती, कथा, शासन व काही प्रवास वर्णनात्मक ग्रंथ इत्यादीमधून भारतच्या प्राचीन काळातील स्थानिक स्वशासनाचे पुरावे मिळतात. ग्रामीण स्थानिक स्वशासन आणि नागरी स्थानिक स्वशासन अशा दोन्ही प्रकारच्या शासन व्यवस्था स्थानिक कारभारासाठी भारतीयोंचे जीवन व्यापून टाकले. भारतातील या संस्थांचा इतिहास म्हणजे शतकानुशतके संघर्षाचे वाहणारा प्रवाह आहे. कालमानानुसार त्या प्रवाहास कधी अधिक वेग मिळाला तर काही वेळा त्या संस्थांचा इतिहास असा काही वेगाने उफाळून वाहू लागतो की, त्यामुळे व्यक्तीचे समाजाचे आणि राष्ट्राचे जीवन अमुंलाग्र बदलेले आढळते. भारतीयोंचा जीवनात विलक्षण स्थान ग्रहण केले आहे.

रामायणाच्या अभ्यासातून हे स्पष्ट होते की, त्या काळात प्रशासन व्यवस्था, 'पुर' व 'जनपद' अशा दोन प्रकारात विभाजित होती. ग्रामांचा उल्लेख वेगळा केला जात असे. परंतु ग्राम कोणत्याही 'जनपद' मध्ये सामावलेले असे. 'ग्राम', 'महाग्राम' व घोष यांचा उल्लेख रामायणात मिळतो. ग्रामाच्या जवळचे नगर, 'पट्टण' म्हणून ओळखले जाते. यांचा उपयोग जनपदाना बाजार हाट करण्यासाठी होत असे रामायणात श्रेणी आणि नियम अशा निवासी संघटनांचा उल्लेख येतो.

महाभारतातील 'शांतीपर्व' मधील वर्णनानुसार शासनाचा सर्वात छोटा घटक ग्राम हाच होता. ग्राम यांचा प्रमुखास 'ग्रामीक' असे म्हणून ओळखले जाते. तो शासनाचा घटकाचा प्रमुख होता. मनुस्मृतीमध्ये यांचा उल्लेख आहे. तसेच कौटिल्याच्या अर्थशास्त्रात यांचा उल्लेख आढळतो. मध्ययुगीन काळ व ब्रिटीश काळात स्थानिक स्वशासनाचा विकास झालेला दिसून ब्रिटीश काळात लॉर्ड रिपन यांना त्याचे श्रेय दिले जाते.

स्थानिक स्वशासनाचा अर्थ :

१. ब्रिटीशिका विश्वकोष : स्थानिक स्वशासन म्हणजे पूर्ण राज्याऐवजी अंतर्गत दृष्ट्या छोट्या भूभागात व्यवस्थापन करून निर्णय घेऊन त्यांचे कार्यवाही करणारी सत्ता होय.
२. राज्यशास्त्र शब्द कोश : स्थानिक स्वशासन शासनाचा असा भाग असतो की, ज्याचा मुख्य संबंध कोणत्या तरी शहर अथवा क्षेत्रीय समितीच्या स्थानिक व्यवहाशी असतो. साधारणपणे स्थानिक स्वशासन राज्य सरकार किंवा राष्ट्रीय सरकार कडून अधिकार प्राप्त सत्तेचा उपयोग करते त्यांना राज्य घटने अंतर्गत स्वतंत्र अधिकार प्राप्त झालेले असतात.
३. जॉन जे क्लार्क : स्थानिक शासन केंद्र शासन किंवा राज्य शासन यांचा एक भाग असते. जे त्या विशेष भागातील अथवा जिल्ह्यातील रहिवाशांच्या गरजा लक्षात घेऊन आवश्यक वाटल्यास अशा कामाची जबाबदारी स्थानिक ठिकाणाच्या लोकांकडे सोपवून त्यावर केंद्राचे नियंत्रण स्थापित केले जाते.

आवश्यकता :

लोकशाही प्रणाली स्विकारलेल्या देशात स्थानिक स्वशासन संस्था असते. ही मुलभूत आवश्यकता समजली जाते. लोकशाही गणराज्यात लोकाभिमुख स्थानिक स्वशासन संस्था असणे हे त्या शासन व्यवस्थेच्या पूर्णपणे विकासाचे व समृद्धीचे लक्षण समजले जाते. लोकशाही संवर्धनासाठी व सामाजिक समस्या सोडवणे त्याच बरोबर सत्तेचे विकेंद्रीकरणासाठी लोकांची रुची निर्माण करणे. नौकशाहीतील दोष कमी करणे यासाठी स्थानिक स्वशासनाची आवश्यकता आहे.

महत्त्व :

एखाद्या गोष्टीचे महत्त्व त्या गोष्टीच्या उपयुक्ततेवरून ठरत असते. स्थानिक स्वशासन संस्थांची उपयुक्तता आज सर्व सामान्य ठरली आहे. ज्या देशातील स्थानिक स्वशासन संस्था चांगले कार्य करतात. त्या देशात सुराज्य प्रस्थापित होत असते. ज्या देशात मजबूत स्थानिक स्वशासन संस्था असतात. त्या देशात स्थिर व बळकट लोकशाही प्रधान शासन निर्माण होत असते. नागरीकांच्या गरजा भागविण्याचे काम करते. 'जेम्स ब्रुस' म्हणतात. स्थानिक स्वशासन संस्थामुळे देशात उत्तम नागरिक बनविण्यात मदत होते. सामान्य नागरिकांना कृतिशिल बनवण्यास व प्रमाणिकपणे कार्य करण्यास या संस्था स्फूर्ती आळस आणि स्वार्थ यांचा त्याग केल्यास या संस्था पृथ्वीवर स्वर्ग साकारू शकतात.

भारतीय स्वशासनाला राज्यघटनेचा आधार :

आज स्थानिक स्वशासनाचा दर्जा घटनात्मक बनला आहे. १९९३ त्या वेधानिक आधारावर होत्या. आज त्यांना घटनेत स्थान दिल्यामुळे त्या आज घटनात्मक बनल्या आहेत. यापूर्वी घटनेच्या कलम ४० मध्ये राज्याने या संस्था निर्माण करण्याची निती स्विकारावी ऐवढा उल्लेख होता.केंद्र आणि राज्य यांच्या अधिकारांच्या विभागणीत स्थानिक स्वशासन हा विषय राज्य सुचित समाविष्ट केल्याने ते सातव्या परिशिष्टांत आढळतो.

ग्रामीण स्थानिक स्वशासनासाठी ७३ वी घटनादुरुस्ती झाली आहे. 'पंचायत राज' संबंधीची ही घटना दुरुस्ती असून डिसेंबर १९९२ ला दोन्ही सभागृहानी मान्यता दिली असून घटक राज्यानी मान्यता दिली आहे. २० एप्रिल १९९३ पासून त्यांची अंमलबजावणी सुरु झाली या घटनादुरुस्तीने राज्यघटनेत भाग ९ समाविष्ट करून कलम २४२ ते २४३ ओ एकूण १५ कलमे या कलमाचा समावेश केला आहे.त्यासाठी ११ वे परिशिष्ट जोडले आहेत.

स्थानिक स्वशासनातील नेतृत्व :

स्थानिक स्वशासन संस्था सामान्य जनतेलाच केवळ राजकीय प्रशिक्षणाचे पाठ देतात असे नव्हे तर या जनतेचे नेतृत्व करणाऱ्या वर्गाला देखील प्रशिक्षण देतात उभरत्या नेतृत्वाचे भरण पोषण करण्यात या संस्थांचे योगदान महत्व पूर्ण मानले जाते. एवढेच नव्हे तर अगदी सामान्य माणसातही नेतृत्वाचे गुण संवर्धित करण्यात या संस्था अग्रेसर ठरल्या आहेत. या संस्थातून कार्य करणाऱ्याला राजकारणाचे आणि प्रशासनाचे अनुभव येतात.अनेक गोष्टीचे ज्ञान मिळते हा अनुभव व ज्ञान हे नेत्यांना राज्य व राष्ट्रीय पातळीवर नेतृत्व करताना उपयोगी पडतो.भारतातील नव्हे तर जगातील अनेक थोर व्यक्ती ज्यांनी राजकारणात लौकिक प्राप्त केला आहे.अशा विभूतीचे कार्य स्थानिक स्वशासन संस्थातूनच सुरु झाले. विन्स्टन चर्चिल, मोतीलाल नेहरु, जवाहरलाल नेहरु, सुभाषचंद्र बोस, लाला लजपतराय, सरदार वल्लभभाई पटेल, फिरोजशाहा मेहता, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, वसंतराव नाईक, शिवराज पाटील चाकुरकर,विलासराव देशमुख अशा अनेक मान्यवरांनी नामावली देता येईल. त्याचे सार्वजनिक जीवन स्थानिक स्वशासनाच्या माध्यमातून सुरु झाले. प्रो लॉस्की तर म्हणतात की, अशा व्यक्तीनाच केंद्रीय अथवा राज्य सरकारात प्रतिनिधीच्या रुपात काम करण्याचा अधिकार मिळाला पाहिजे की, ज्यांनी कमीत कमी तत्पूर्वी तीन वर्ष स्थानिक स्वशासन संस्थातून प्रतिनिधीच्या रुपात कार्य केलेले असले पाहिजे. सामाजिक जीवनाशी सुसंगत विचार प्रवाह निर्माण झाल्यास या वावतीत नवीन नेतृत्व निर्माण होऊ शकते. हे नेतृत्व रुढी, परंपरामध्ये न दवता, जुनी जळमटे बाजूला सारून जीवनाकडे निकोप वृत्तीने पाहणाऱ्या उदयोन्मुख युवा पिढीतून निर्माण होऊ शकेल. राजकीय जीवना बरोबरच सामाजिक जीवनाही गतिमान बनवून विधायक दृष्टी ठेवणारे नेतृत्व निर्माण होईल अशा बाळगली पाहिजे.

ग्रामीण समुदायाचा विकास :

ग्राम सभा : पंचायतराज रचनेमध्ये सर्वात छोटा घटक म्हणून ग्रामसभा ओळखली जाते. संपूर्ण शासनाच्या ग्रामीण क्षेत्रातील योजना व विकासाची स्वप्ने साकारण्याचा हा मूलभूत घटक आहे.७३ व्या घटनादुरुस्तीने ग्रामसभेला घटनात्मक दर्जा दिला आहे.गावातील प्रत्येक प्रौढ स्त्री पुरुषांचा समावेश ग्राम सभेत होतो.ग्रामपंचायत हा स्वायत्त घटक निर्माण करणारी ग्राम सभाच असते. व्याख्या ग्रामसभा म्हणजे गाव पातळीवरील पंचायत क्षेत्रामध्ये अंतर्भूत असलेल्या एखाद्या गावांशी संबंधित असलेल्या मतदार यादीत ज्यांची नावे नोंदविण्यात आलेली असतील अशा व्यक्तींची मिळून बनलेली संस्था होय.

पुढील कलम २४३ क या स्वतंत्र कलमात म्हटले आहे की, ग्रामसभा, गावपातळीवर राज्याच्या कायदेमंडळाने कायदा करून ठरवून दिलेली कार्ये पूर्ण करील आणि अधिकारांचा वापर करील, म्हणजे या कलमाद्वारे ग्रामसभेला भारतीय राज्यघटनेनुसार अधिकार प्राप्त झाले आहेत. त्याचप्रमाणे कर्तव्य ही पार पाडावी लागतात.

राज्यघटनेचे २४३(ख) व २४३(क) या कलमाआधारे असे स्पष्ट नमुद करता येते की, ग्रामसभेला घटनात्मक दर्जा तर प्राप्त झाला आहेच शिवाय या दर्जाचे स्वरूप देशपातळीवर लोकसभा किंवा राज्यपातळीवर विधानसभा यांच्यासारखे आहे. त्या प्रकारचा दर्जा गाव पातळीवर ग्राम सभेला प्राप्त झाला आहे.यामुळे ७३ वी घटना दुरुस्ती ही एक ऐतिहासिक बदल घडवून आणणारी घटना दुरुस्ती ठरते.

ग्रामसभा ही लोकसभा व विधानसभा यापेक्षाही श्रेष्ठ आहे.गावातील प्रत्येक मतदार हा कोणतेही निवडणूक न लढवता संसद सदस्याप्रमाणे अथवा आमदाराप्रमाणे ग्रामसभेच्या कार्यात भाग घेऊ शकतो.'मतदार हा आमदार' आहे.ही जाणीव या ग्रामसभेच्या सदस्यांना होणे किती आवश्यक आहे.हे यावरून स्पष्ट होते.

२. त्रिस्तरीय पध्दती :या कायद्याप्रमाणे प्रत्येक राज्यात ग्रामस्तर आणि मध्यम स्तर, जिल्हा स्तर अशा त्रिस्तरीय पंचायतीराज व्यवस्थेची तरतुद केली गेली आहे. अशा प्रकारे हा कायदा देशभरातील पंचायतीराज व्यवस्थेत एक समानता आणतो.

३. अध्यक्ष आणि सदस्य यांची निवड :ग्रामस्तर, मध्यम स्तर आणि जिल्हा स्तरावरील पंचायतीमधील सर्व सदस्य आणि अध्यक्ष यांची लोकाकडून प्रत्यक्ष पध्दतीने निवड केली जाईल अशी तरतुद आहे. मध्यम आणि जिल्हा स्तरावरील पंचायतीचे निर्वाचीत सदस्य त्यांच्यापैकी एकाचा अप्रत्यक्ष पध्दतीने अध्यक्षपदी निवड करतील. अशीही तरतुद आहे. परंतु ग्रामस्तरावरील पंचायतीच्या अध्यक्षाची निवड राज्य विधीमंडळ ठरवेल त्या पध्दतीने होईल.

४. जागामध्ये आरक्षण : तिन्ही स्तरावरील प्रत्येक पंचायतीत पंचायत क्षेत्रातील एकूण लोकसंख्येपैकी अनुसूचित जाती व जमातीच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात त्यासाठी जागा आरक्षित असतील. अशी कायदयात तरतुद आहे.या व्यक्तिरिक्त राज्य विधीमंडळ ग्राम किंवा इतर स्तरावरील पंचायतीचे अध्यक्षपद अनुसूचित जाती व अनुसूचित जमातीसाठी आरक्षित ठेवू शकतो.अशी कायदयात तरतुद आहे. शिवाय प्रत्येक स्तरावरील एकूण अध्यक्षपदांपैकी किमान एक- तृतीयांश पदे महिलासाठी आरक्षित असतील या कायदयाने कोणत्याही स्तरावर पंचायती जागा किंवा अध्यक्षपदे मागासवर्गीयांसाठी आरक्षित ठेवण्यांची तरतुद करण्यांचा अधिकार राज्य विधीमंडळाला देण्यात आला आहे.

५. पंचायतीचा कार्यकाल : प्रत्येक स्तरावरील पंचायतीचा कार्यकाल पाच वर्षे असेल परंतु कार्यकाल संपण्यापूर्वी पंचायत विसर्जित करता येते.

६. अपात्रता : जर ती संबंधीत राज्याच्या विधीमंडळाच्या निवडणुकीसाठी अमलात असलेल्या कोणत्याही कायदयानुसार अपात्र असेल.

जिल्हा परिषद - पंचायतराज ही स्थानिक स्वशासनाची त्रिस्तरीय शासन व्यवस्था आहे.या तीन स्तरांपैकी सर्वात वरिष्ठस्तर जिल्हा पातळीवर आहे.यालाच 'जिल्हा परिषद' असे संबोधले जाते.जिल्हयाच्या विकासाची ही सर्वोच्च संस्था आहे.विकासाचा केंद्रबिंदू समजल्या जाणाऱ्या या संस्थेला पंचायतराज व्यवस्थेत अनन्य साधारण असे महत्व आहे.भारताच्या ग्रामीण भारताचा विकास करण्यासाठी ही व्यवस्था बलवतरांय मेहता समितीने सुचविली आहे.विकासाची सर्व कार्ये संपन्न करून घेण्याची जबाबदारी जिल्हा परिषदेवर टाकण्यात आली आहे. त्यामुळे असे म्हणावे लागते की, जितक्या कार्ये क्षमतेने जिल्हा परिषद विकासाची कार्ये पार पाडील. तितक्या जलद गतीने ग्रामीण भागाचा विकास होईल. यासाठी महाराष्ट्र शासनाने महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती अधिनियम १९६१ हा कायदा केला आहे. त्याआधारे महाराष्ट्रातील जिल्हा परिषद व पंचायत समितीचा कारभार चालविला जातो.

जिल्हा परिषदेचे कार्य :

१. कृषी : कृषीविषयक कार्य करणे हे जिल्हा परिषदेची मूलभूत जबाबदारी आहे.
२. पशुसंवर्धन आणि दुग्धविकास : पशुसंवर्धासाठी पशुवैद्यकीय दवाखाने निर्माण करणे.
३. समाजकल्याण : मागासवर्गाचा विकास, शैक्षणिक, शिष्यवृत्ती देणे फी माफ करणे, वस्तीगृहाची स्थापना, शाळाची स्थापना त्यासाठी कर्ज उपलब्ध करून देणे त्यांना अर्थ साहय करणे.
४. मागासवर्गाचा आर्थिक विकास : शेतीची सामग्री देणे त्यासाठी कर्ज उपलब्ध करून देणे. त्यांना अर्थसाहय करणे.
५. अस्पृश्यता निवारण : हरिजन सप्ताह साजरे करणे, झुनका भाकर कार्यक्रम, संवर्ग हरिजन यांच्यातील आंतरजातीय विवाहांना प्रोत्साहन देणे.
६. मागासवर्गाच्या कल्याणाचे कार्यक्रम : महिला, बालकांच्या कल्याणाचे कार्यक्रम व प्रकल्प बालवाडया स्थापना समाज प्रबोधानांचे कार्यक्रम राबविणे. संस्कार केंद्र चालविणे सभागृह निर्माण करणे, घरे देणे, पिण्याच्या पाण्याची तरतुद करणे.
७. मागासवर्गीयांना प्रशिक्षण देणे : प्रशिक्षण शिबीर आयोजित करणे, तांत्रिक प्रशिक्षणाची सोय करणे. कुटीर रुग्णालये निर्माण करणे, प्राथमिक आरोग्य केंद्र निर्माण करणे, फिरती आरोग्य केंद्र, लस टोचने, शालेय आरोग्य सेवा इत्यादी.
८. वैद्यकीय - आयुर्वेदिक व सार्वजनिक आरोग्य : तालुका दवाखाने त्यांच्या दर्जात वाढ करणे, कुटीर रुग्णालये निर्माण करणे, प्राथमिक आरोग्य केंद्र निर्माण करणे, फिरती आरोग्य केंद्र, लस टोचने, शालेय आरोग्य सेवा इ.
९. इमारती व दळवळण : ग्रामीण रस्ते निर्माण करणे, पुलाचे बांधकाम ते सुस्थितीत ठेवणे त्याची दुरुस्ती करणे प्रशासकीय इमारती निर्माण करणे.
१०. सार्वजनिक आरोग्य अभियांत्रिकी : ग्रामीण पाणी पुरवठा करणे, समाजासाठी पाणी पुरवठा करणे.
११. प्रसिध्दी: फिरती प्रसिध्दी याने जिल्हा प्रदर्शन करमणुकीच्या कार्यक्रमाद्वारे प्रसिध्दी.
१२. सामुहिक विकास : समाज शिक्षण
१३. इतर महत्वाचे :आदर्श गांव लोकांचे आरोग्य सुविधा सोयी बाजार, धर्मशाळा, गावठाणा बसविणे, स्मशानभूमी, दफनभूमी, सहकार संस्था, पतसंस्था, जाहीर स्वागत समारंभ, तीर्थयात्राचा विकास.

पंचायतसमिती : पंचायतराज व्यवस्थेतील त्रिस्तरीय आकृती बंधात मधल्या स्तरावर 'पंचायत समिती' कार्यरत आहे.समुह विकासासाठी गटनिर्माण करण्यात आले होते.हा गट साधारणपणे तालुका स्तरावर निर्माण करण्यात आला होता. परंतु काही ठिकाणी असे ही होते की, एका विकास गटाचा विस्तार दुसऱ्या तालुक्यात अथवा तहसिलच्या कार्यक्षेत्रात पोहचत असे विकासासाठी फार लहान अथवा फार मोठे क्षेत्र घटक म्हणून नसावे या विचारामुळे पंचायत समिती हा विकासाचा एक घटक म्हणून स्वीकारण्यात आला.

पंचायत समितीचे कार्ये :

महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समित्या अधिनियम १९६१ कायद्याच्या कलम १०८ अन्वये पंचायत समितीचे कार्य सांगितली आहेत.

१. विकास योजनाचा एक संपूर्ण आराखडा तयार करणे.
२. गट अनुदानातून कोणत्याही कामास किंवा विकास योजनांस मंजूरी देणे.
३. पंचायत समितीच्या सभापती व गटातील इतर कोणत्याही पदाधिकाऱ्याकडे न सोपविलेल्या कार्ये अथवा अधिकार यांचा वापर करणे.
४. पंचायत समितीच्या क्षेत्रातील साधन संपत्तीचा जास्तीत जास्त उपयोग करून घेण्यासाठी आपल्या क्षेत्रात प्राप्त अनुदानातून घ्यावयाचा कामाचे नियोजन करणे.
५. जिल्हा परिषदेच्या विकास योजना व त्याची कार्ये जी त्या पंचायत समितीच्या क्षेत्रात संपन्न होणार असतील. त्या सर्व कामावर देखरेख ठेवणे.
६. जिल्हा परिषदेने मुद्यामहून सोपविलेली त्या गट क्षेत्रातील सर्व कार्येपार पाडणे.
७. पंचायत समितीला आपली कार्येपार पाडण्यासाठी आणि अधिकाराचा वापर करतांना जिल्हा परिषदेकडून प्राप्त झालेल्या सूचनांचा अंमलकरणे.

ग्रामपंचायत :

पंचायतराज व्यवस्थेमध्ये सर्वांत खालच्या स्तरावर ग्रामपंचायत ही स्थानिक स्वशासन संस्था स्थापन करण्यात आली आहे.पंचायतराज व्यवस्थेचा आधारभूत घटक म्हणून ग्रामपंचायतीला फार मोठे महत्व प्राप्त झाले आहे.ग्रामीण विकासांचा प्रमुख घटक म्हणून ग्रामपंचायतीला अनन्य साधारण असे महत्व आहे. पंचायत राज व्यवस्थेतील हे दुहेरी महत्व लक्षात घेऊन केंद्रशासन ग्रामपंचायतीला अधिक अधिकार दिले महाराष्ट्रात ग्रामपंचायतीचा कारभार चालविण्यासाठी मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम १९५८ हा अस्तित्वात आहे. मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम १९५८ कायद्यातील प्रशासकीय अधिकार आणि कर्तव्य या प्रकरणातील कलम ४५ तरतुदीनुसार गावातील ज्या कामा संबंधाने वाजवी तजवीज करणे हे पंचायतीचे कर्तव्य आहे असे कामे ग्राम सुचीत नमुद केलेली आहेत. सदर विषय ७९ असून १२ प्रमुख भागाखाती येतात. कलम २४३ छ अधिकार दिले आहेत.

ग्रामपंचायतीचे कार्य :

१. कृषी २. पशुसंवर्धन ३. वने ४. समाजकल्याण ५. शिक्षण ६. वैद्यकीय सेवा आणि आरोग्य ७. इमारती व दळणवळण ८. पाटबंधारे ९. उद्योगधंदे व कुटीर उद्योग १०. सहकार ११. स्वसंरक्षण व ग्रामसंरक्षण १२. सामान्य प्रशासन

वरील प्रमाणे ग्रामीण समुदाया व स्थानिक स्वशासनाचा सह संबंध येतो.तो ग्रामीण समुदायाच्या विकासाची संलग्नीत आहेत त्यामुळे ते एकमेकांशी संबंधीत तर आहेतच शिवाय ते परस्परावर परावलंबीत आहेत त्यामुळे ते वेगळे कार्य करू शकत नाही.त्यासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि ग्राम विकास याचा सह संबंधावरच ग्रामीण समुदायाचा विकास अवलंबून आहे.

निष्कर्ष :

भारतीय लोकशाहीमध्ये सत्ता विभाजनाच्या सिध्दातानुसार सत्तेचे विकेंद्रीकरण करण्यात आले.कार्यकारी मंडळ, कायदेमंडळ, न्याय मंडळ हे कार्यानुसार वेगळे करण्यात आले.केंद्र सरकार भारतामध्ये सर्वोच्च स्थानी त्यानंतर राज्यांना स्थान देण्यात आले.ग्रामीण भागात स्थानिक स्वशासन यांना महत्व देण्यात आले.त्यानुसार भारतीय लोकशाहीचा शेवटचा टोक म्हणजे ग्रामपंचायत ग्रामपंचायतीच्या वतीने ज्या सुविधा लोकांना पुरविल्या जातात. त्यावरून आपणास असे म्हणता येईल की ग्रामीण भागाचे प्रगतीचे चित्र या स्थानिक संस्थेमुळे निर्माण झाले भारतातील ग्रामीण जनतेचा सामाजिक, आर्थिक व राजकीय विकास हे या संस्थेमुळे झालेले आहे. या ग्रामीण जनता ही आज शिक्षणामुळे जागृत होत आहे.व प्रत्येक भारतीय नागरीक आपल्या अधिकारांच्या बाबत जागृत असल्यामुळे प्रगती होत आहे.हे भारतीय लोकशाहीसाठी शुभ संकेत आहेत.

संदर्भग्रंथ सूची :

१. Panchyatiraj in India- Rajeshwar Dayal
२. Panchyatiraj in India- R.L. Khanna
३. Local Government in India- M.P. Sharma.
४. Leadership in Panchyatiraj- Dr. Arjunrao Darshankar
५. डॉ. रमेश एखेळीकर- भारतातील स्थानिक स्वराज्य संस्था, विद्याबुक्स पब्लिशर्स,औरंगपूर औरंगाबाद, जुन १९९९.
६. प्रा.के.आर.वंग- भारतातील स्थानिक स्वशासन विशेष संदर्भ- महाराष्ट्र राज्य, श्री मंगेश प्रकाशन, २३, नवी रामदास पेठ नागपूर, २००५.
७. डॉ.जी.एस.वडे, भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्था, उद्गम आणि विकास.
८. डॉ. शांताराम भोगले- भारतातील स्थानिक शासन
९. डॉ. अर्जु दर्शनकार- पंचायतराज व नागरी प्रशासन.

An efficient synthesis of imidazolines and benzimidazoles using Lanthanum (III) nitrate hexahydrate

*V. B. NINGDALE¹, S. B. LOMATE¹, S. K. TUPE²

Dept. of Chemistry¹ and Physics²

Kalikadevi Art's, Commerce and Science College, Shirur (Ka.) Dist. Beed [M. S.]-India

*E-mail: vijay_orgchem@yahoo.co.in / 02442-259590

ABSTRACT

Imidazolines and Benzimidazoles have been efficiently synthesized in high yields by treatment of 1,2-diamine with aldehydes using catalytic amount of La(NO₃)₃.H₂O under mild reaction conditions. The key advantages of this protocol are short reaction time, high to excellent yields, simple work up, inexpensive catalyst and simple separation of pure product.

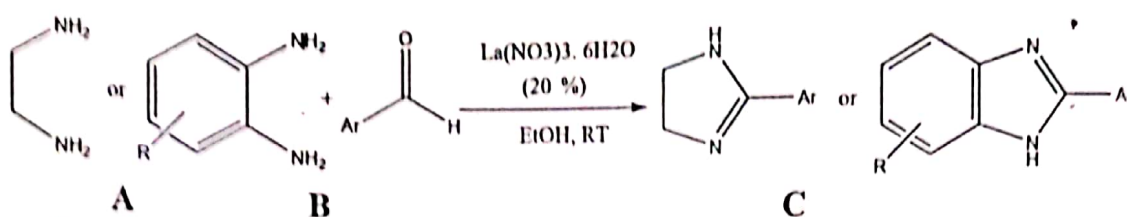
KEYWORDS: Aldehydes; imidazolines; benzimidazoles; Lanthanum (III) nitrate hexahydrate.

INTRODUCTION

The development of simple, efficient and general synthetic method for biological active compounds from readily available catalyst is one of the major challenges in organic synthesis.

The importance of imidazolines and benzimidazoles units arises, because they are found in many biologically active compounds.¹⁻² Imidazolines are biologically active pharmacophore and synthetic intermediates in medicinal chemistry.³⁻⁵ They are also used as chiral catalysts,⁶ chiral auxiliaries⁷ and ligands for asymmetric catalysis.⁸⁻⁹ As a continuation of our interest in the synthesis of imidazolines due to its broad spectrum of biological activities including antihyperglycemic,¹⁰⁻¹¹ antiinflammatory¹²⁻¹³ antihypertensive,¹⁴⁻¹⁵ anticancer¹⁶ and antihypercholesterolemic¹⁷ agents. In addition, the benzimidazole moiety shown excellent biological activity like antiulcers, antihypertensives, antivirals, antifungals, anticancers, antihistaminics, antibacterial, antitubercular, antiasthmatic, antidiabetic and antiprotozoal.¹⁸⁻²⁶ Recently, several methods have been developed, for the synthesis of benzimidazoles in presence of various catalyst such as sulfur/ultrasonic,²⁷ homogeneous Lewis acids,²⁸ I₂ /KI/K₂CO₃, H₂O₂,²⁹ pyridinium-p-toluenesulfonate,³⁰ ionic liquids,³¹ polyaniline-sulfate,³² (bromodimethyl)sulfonium bromide³³, Zeolite³⁴ and LaCl₃.³⁵ However, all of the synthetic protocols reported so far suffer from disadvantages such as, use of organic solvents,^{28,30-32} harsh reaction conditions,²⁹⁻³³ excess temperature,²⁹ prolonged reaction times,³⁰⁻³² use of expensive reagents.²⁸⁻³¹ Therefore, there is a strong demand for a highly efficient and environmentally benign method.

Lanthanum (III) nitrate have recently attracted much attention in organic transformations due to its high acidity, thermal stability, low toxicity, low cost and good stability, Furthermore, current literature reveals that Lanthanum (III) nitrate has been utilized as an effective catalyst in the synthesis of 4-(3H)-quinazolinones under solvent-free conditions, chiral tetrahydroquinolino pyranose derivatives, chemoselective deprotection of acetonides, chemoselective protection of amines as N-benzyloxycarbonyl derivatives, acetylation of alcohols, phenols and amines with acetic anhydride and synthesis of α -amino nitriles.⁴⁵⁻⁵⁰



Scheme 1: Synthesis of imidazolines and benzimidazoles (A, B → Reactants and C → Product)

EXPERIMENTAL

Materials and Apparatus

The chemicals and solvents were purchased from commercial suppliers (Merck, S.D. fine and Spectrochem) and they were used without purification prior to use. Melting points were recorded by open tube capillary method and are uncorrected. The progress of the reaction and the purity of the compounds were monitored by thin layer chromatography (TLC), using analytical silica gel plates (Merck 60 F250). ¹H NMR and ¹³C NMR spectra were recorded on 400 and 100 MHz, respectively. NMR spectra were obtained in DMSO-d₆ solutions and are reported as parts per million (ppm) downfield from tetramethylsilane (TMS) as internal standard and the coupling constants (J) are expressed in Hertz (Hz).

GENERAL PROCEDURE FOR THE SYNTHESIS OF IMIDAZOLINES / BENZIMIDAZOLINES

La(NO₃)₃·6H₂O (15 mol%) was added to a stirred solution of the mixture of substituted 1,2 diamine (1.1 mmol), aldehyde (1 mmol) in ethanol (5 mL) and the mixture was stirred at room temperature for appropriate time (Table 2). The progress of the reaction was monitored by thin layer chromatography (TLC) (Hexane: Ethyl acetate). After the reaction was completed, the pure products were isolated by filtration. The solid product was purified by recrystallization from ethanol.

Selected spectral data of compounds are given below.

2-(4-Bromophenyl)imidazoline: IR (KBr, cm⁻¹): Solid; 243-245°C v 3187 (NH), 2961 and 2941 (CH), 1608; ¹H NMR (DMSO-d₆, 400 MHz): δ 7.81-7.70 (m, 4H), 4.31 (br, 1H), 3.85 (s, 4H).

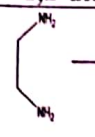

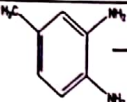
2-(p-Tolyl)-1H-benzimidazole: Solid; mp 264-266°C ¹H NMR (DMSO-d₆, 400 MHz) δ 12.83 (s, 1H), 8.08 (d, J=7.8Hz, 2H), 7.59 (s, 2H), 7.37 (d, J=7.8Hz, 2H), 7.21-7.19 (m, 2H), 2.39 (s, 3H).

RESULT AND DISCUSSION

To explore the use of Lanthanum (III) nitrate hexahydrate as a catalyst, a reaction of benzaldehyde B and 1, 2 diamine A was conducted as a standard model reaction for the preparation of imidazolines and benzimidazoles (Scheme 1). The reaction in the absence of catalyst did not give any desired product. To determine the exact amount of the catalyst, we investigated the model reaction using different concentrations of Lanthanum (III) nitrate hexahydrate (Table 1). During this study, we observed that 15 mol% Lanthanum (III) nitrate hexahydrate was proved to be an efficient catalyst to conduct the reaction smoothly. With these optimized reaction conditions, effect of different solvents such as methanol, dichloromethane, acetonitrile, THF, ethanol, aqueous ethanol and water was investigated. Among the tested solvents, ethanol was found to be superior over the other tested solvents in terms of both yield and reaction time for this transformation. Encouraged by this result, in order to build the generality of the reaction, various aromatic aldehydes, possessing electron-donating and electron-withdrawing groups were converted to 2-arylbenzothiazole derivatives in good to excellent yields. All the results are summarized in Table 1. In order to understand the efficiency and greenness of the method, we compared our results on the synthesis of imidazolines and benzimidazoles with the well known data from the literature. Many of the previously reported methodologies suffer from one or more disadvantages such

as requirement of excess amount of catalyst, high temperature, ultrasound irradiation, prolonged reaction time, and use of volatile and toxic organic solvents. Thus, the present method avoids the disadvantages of the previously reported methodologies.

Table 1: Synthesis of imidazolines and benzimidazoles

Entry	1,2-diamines	Aldehyde	Product (a-i)	Yield %	mp (°C)
1		R-C ₆ H ₄ -CHO	a 4-NO ₂ ; b 4-CH ₃ ; c 4-Br	96 93 91	228-231 179-181 243-245
2		R-C ₆ H ₄ -CHO	d 4-CH ₃ ; e H; f 4-OCH ₃	94 89 97	274-276 293-295 222-225
3		R-C ₆ H ₄ -CHO	g H; h 4-NO ₂ ; i 3-F	95 97 96	235-236 240-242 174-176

CONCLUSION

In summary, we have developed a facile, efficient and green method for the synthesis of imidazolines and benzimidazoles through condensation of aromatic aldehydes with 1,2 diamine in the presence of Lanthanum (III) nitrate hexahydrate under mild reaction conditions. Compare with the previously reported methodologies, the present protocol features simple work up, environmentally benign, high yields and use of catalytic amount of a cheap catalyst.

ACKNOWLEDGEMENT

Authors wish to thank Principal, Kalikadevi ACS College, Shirur (Ka.) Dist. Beed for providing necessary laboratory facilities.

REFERENCES

- [1] Preston, P. N., *Chem. Rev.* 1974, 74, 279-314
- [2] Rondu, F.; Bihan, G. L.; Tounian, A. P.; Wang, X.; Lidy, S.; Touboul, E.; Lamouri, A.; Dive, G. J. H.; Pfeiffer, B.; Renard, P.; Guardiola-Lemaitre, B.; Manechez, D.; Penicaud, L.; Ktorza, A.; Godfroid, J.J., *J. Med. Chem.* 1997, 40, 3793-3803.
- [3] Hayashi, T.; Kishi, E.; Soloshonok, V. A.; Uozumi, Y. *Tetrahedron Lett.* 1996, 37, 4969-4972;
- [4] Jung, M. E.; Huang, A., *Org. Lett.* 2000, 2, 2659-2661;
- [5] Lin, Y. R.; Zhou, X. T.; Dai, L.X.; Sun, J., *J. Org. Chem.* 1997, 62, 1799-1803.
- [6] Isobe, T.; Fukuda, K.; Araki, Y.; Ishikawa, T., *Chem. Commun.* 2001, 243-244.
- [7] Langlois, Y.; Dalko, P. I., *J. Org. Chem.* 1998, 63, 8107-8117.
- [8] Menges, F.; Neuburger, M.; Pfaltz, A., *Org. Lett.* 2002, 4, 4713-4716;
- [9] Boland, N. A.; Casey, M.; Hynes, S. J.; Matthews, J. W.; Muller-Bunz, H.; Wilkes, P., *Org. Biomol. Chem.* 2004, 2, 1995-2002.
- [10] Doyle, M. E.; Egan, J. M., *Pharmacol. Rev.* 2003, 55, 105-131
- [11] Meidute-Abaraviciene, S.; Mosen, H.; Lundquist, I.; Salehi, A., *Acta Physiol.* 2009, 195, 375-383.



- [12] Ueno, M.; Imaizumi, K.; Sugita, T.; Takata, I.; Takeshita, M., *Int. J. Immunopharmacology*.1995, 17,597-603;
- [13] Kahlon, D. K.; Lansdell, T. A.; Fisk, J. S.; Tepe, J. J., *Bioorg. Med. Chem.* 2009, 17, 3093-3103.
- [14] Touzeau, F.; Arraylt, A.; Guillaumet, G.; Scalbert, E.; Pfeiffer, B.; Rettori, M. C.; Renard, P.; Merour, J. Y., *J. Med. Chem.* 2003,46 , 1962-1979;
- [15] Masajtis-Zagajewska, A.; Majer, J.; Nowicki, M., *Hypertens. Res.* 2010, 33, 348-353.
- [16] Sun, M.; Wu, X. Chen, J.; Cai, J.; Cao, M.; Ji, M., *Eur. J. Med. Chem.* 2010,45, 2299-2306.
- [17] Li, H.Y.; Drummond, S.; DeLucca, I.; Boswell, G. A., *Tetrahedron*, 1996, 52, 11153-11162.
- [18] Scott, L. J.; Dunn, C. J.; Mallarkey, G.; Sharpe, M. Esomeprazole, *Drugs* 2002, 62, 1503.
- [19] Spasov, A. A.; Yozhitsa, I. N.; Bugaeva, L. I.; Anisimova, V. A. , *Pharm. Chem. J.*, 1999,33, 232.
- [20] Kim, J. S.; Gatto, B.; Yu, C.; Liu, A.; Liu, L. F.; LaVoie, E. J., *J. Med. Chem.* 1996,39, 992.
- [21] Navarrete-Názquez, G.; Rojano-Vilchis, M. M.; Yépez-Mulia, L.; Meléndez, V.; Gerena, L.;Hernández-Campos, A.; Castillo, R.; Hernández-Luis, F., *Eur. J. Med. Chem.* 2006, 41,135-141.
- [22] Mirkhani, V.; Moghadam, M.; Tangestaninejad, S.; Kargar, H.,*Tetrahedron Lett.*2006,47, 2129.
- [23] Curini, M.; Epifano, F.; Montanari, F.; Rosati, O.; Taccone, S. *Synlett* 2004, 1832.
- [24] Gogoi, P.; Konwar, D. *Tetrahedron Lett.* 2006 , 47, 79.
- [25] Hornberger, K. R.; Adjabeng, G. M.; Dickson, H. D.; Davis-Ward, R. G., *Tetrahedron Lett.* 2006, 47, 5359.
- [26] Nadaf, R. N.; Siddiqui, S. A.; Daniel, T.; Lahoti, R. J.; Srinivasan, K. V., *J. Mol. Catal. A: Chem.* 2004, 214, 155.
- [27] Srinivas, U.; Srinivas, C.; Narender, P.; Rao, V. J.; Palaniappan, S., *Catal. Commun.*2007, 8, 107.
- [28] Das, B.; Holla, H.; Srinivas, Y.,*Tetrahedron Lett.* 2007, 48, 61.
- [29] Hegedüüs, A.; Hell, Z.; Potor, A., *Synth Commun.* 2006, 36, 3625-3630.
- [30] Yekkirala V.; Sudhagani R. K.; Panuganti L.; *Org. and Med. Chemistry Lett.*, 2013,3:7



Dielectric Relaxation Study of Atarax and Propanol Binary Mixture Using Time Domain Reflectometry Technique

Dongare A. K.¹, Tupe S. K.², Sayyad S. B.³, Kumbharkhane A. C.⁴, Khirade P. W.⁵

¹Department of Physics, Vasantdada Patil College, Patoda.

²Department of Physics, Kalikadevi College, Shirur(K).

³Department of Physics, Milliya Arts, Science & Management Science College, Beed.

⁴Department of Physics, S. R. T. M. University, Nanded.

⁵Department of Physics, Dr. B. A. M. University, Aurangabad.

Abstract

The dielectric relaxation study for atarax and propanol binary mixture has been carried out using the time domain reflectometry (T.D.R.) technique at temperature 283K, 288K, 293K and 298K and at different concentration, in the frequency range of 10MHz to 50 GHz. The dielectric parameter viz. static permittivity relaxation time has been determined using Debye model. Kirkwood correlation factor, excess permittivity, excess inverse relaxation time and thermodynamic parameters have been obtained from the complex permittivity spectra. The dielectric parameter shows change with temperature and concentration. The results obtained are used to interpret the nature and kind of solute-solvent interaction.

Key words: permittivity, relaxation time, excess properties, time domain reflectometry.

Introduction

The dielectric relaxation study is one of the ways to obtain information of solute solvent interaction in the binary solution. The chemicals used in the present work were psychopharmaceutical drug. Atarax is a benzodiazepine derivative. Chemically, atarax is 7-chloro-1, 3-dihydro-1-methyl-5-phenyl-2H-1, 4-benzodiazepin-2-one. It is a colorless crystalline compound. Atarax is indicated for the management of anxiety disorders or for the short term relief of the symptoms of anxiety. Anxiety or tension associated with the stress of everyday life usually does not require treatment with an anxiolytic. Atarax is a useful adjunct for the relief of skeletal muscle spasm due to reflex spasms to local pathology.^[1]

Atarax even though considered to be a safer drug, has high chance of drug abuse and act as a potent central nervous system depressant when taken along with other drugs resulting in stupor, coma and death. Paraquat poisoning has high mortality even in small quantity due to multi organ dysfunction syndrome. Surveillance of misuse should be undertaken in the current use. Effective mental health treatment, which often includes pharmacologic therapy.^[2]

Propanol is a primary alcohol with the formula $\text{CH}_3\text{CH}_2\text{CH}_2\text{OH}$ ($\text{C}_3\text{H}_8\text{O}$) This colorless liquid is also known as propan-1-ol, 1-propyl alcohol, n-propyl alcohol, and n-propanol. It is formed naturally in small amounts during many fermentation processes and used as a solvent in the pharmaceutical industry [3]

Experimental

A. Chemical and sample preparation

The chemical used in the present work is atarax and propanol, are of spectroscopic grade, obtained commercially with 99% purity and used without further purification. The solutions were prepared at six different compositions in steps of 20 % by volume. These volume fractions are converted to mole fractions for further calculations. Using this volume percentage the weight fraction is calculated^[4] as

$$X_A = \frac{V_A \rho_A}{[(V_A \rho_A) + (V_B \rho_B)]} \quad (1)$$

where, V_A and V_B are the volume and ρ_A and ρ_B is the density of liquid A (atarax) and B (propanol) respectively.

B. T.D.R. specification, Time domain reflectometry set up and data acquisition.

The Tektronix DSA 8300 sampling oscilloscope sampling main frame with the dual channel sampling module 80E10B has been used for time domain reflectometry. The sampling module provides 12ps incident and 15ps reflected rise time pulse. The coaxial cable used to feed pulse has 50 Ohm impedance, inner diameter of 0.28mm and outer diameter of 1.19mm. Sampling oscilloscope monitors changes in pulse after reflection from end of line. Reflected pulse without sample $R_1(t)$ and with sample $R_x(t)$ were recorded in time window of 5 ns and digitized in 2000 points. To minimize the signal to noise ratio the signal reflected is obtained from 512 samples after an optimum average of 100 times for each record. The subtraction [$p(t) = R_1(t) - R_x(t)$] and addition [$q(t) = R_1(t) + R_x(t)$] of these pulses are done in oscilloscope memory. These subtracted and added pulses are transferred to PC through compact disc for further analysis.^[5]

C. Data analysis



The time dependent data were processed to obtain complex reflection coefficient spectra, $\rho^*(\omega)$ over the frequency range from 10 MHz to 50 GHz using Fourier transformation^[6,7] as

$$\rho^*(\omega) = \left[\frac{c}{j\omega d} \right] \left[\frac{\rho(\omega)}{q(\omega)} \right] \tag{2}$$

Where, $\rho(\omega)$ and $q(\omega)$ are Fourier transforms of $[R_1(t) - R_x(t)]$ and $[R_1(t) + R_x(t)]$, respectively. C is the velocity of light, ω is angular frequency and d is the effective pin length and $j = \text{root}(-1)$. The complex permittivity spectra^[8] $\epsilon^*(\omega)$ were obtained from reflection coefficient spectra $\rho^*(\omega)$ by applying a bilinear calibration method. The experimental values of $\epsilon^*(\omega)$ are fitted by Debye equation^[9].

$$\epsilon^*(\omega) = \epsilon_\infty + \frac{\epsilon_0 - \epsilon_\infty}{1 + j\omega\tau} \tag{3}$$

where, ϵ_0 , ϵ_∞ and τ as fitting parameters. The value of ϵ_∞ was kept to be constant as the fitting parameters are not sensitive to ϵ_∞ . A non-linear least squares fit method^[10,11] used to determine the values of dielectric parameters.

Result and Discussion

A. Permittivity and Relaxation Time

Table: 1. Temperature dependent dielectric parameters for binary mixture of Atarax + Propanol.

Mole Fraction of Propanol	283 K	288 K	293 K	298 K
	ϵ_s			
0	63.4	63.55	62.58	61.44
0.5765	41.52	41.77	41.69	42.36
0.7840	37.58	37.37	39.87	41.89
0.8909	36.37	32.86	34.91	33.36
0.9561	28.93	28.13	27.61	26.24
1	25.71	24.39	24.41	23.82
τ (ps)				
0	105	105.2	105.4	105.5
0.5765	86.14	86.18	81.63	81.77
0.7840	107.1	91.18	86.05	86.2
0.8909	122.6	98.9	92.51	92.43
0.9561	143.3	104.5	97.65	97.64
1	175.2	157	142.7	142.5

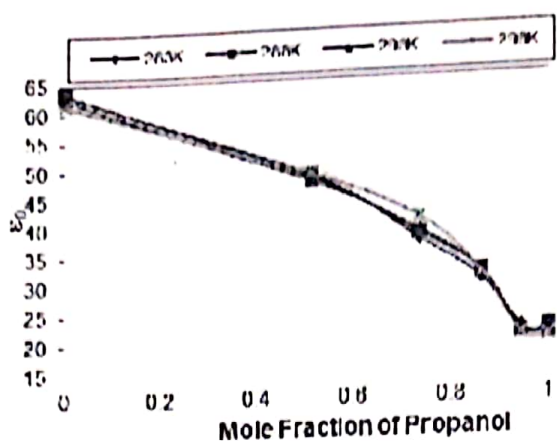


Fig. 1. Variation of static dielectric constant (ϵ_0) as a function of mole fraction of Propanol, at temperatures 283, 288, 293 and 298K.

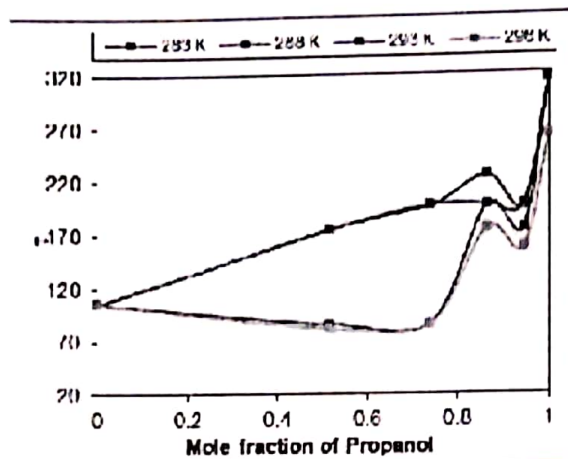


Fig. 2. Variation of relaxation time (τ) as a function of mole fraction of Propanol, at temperatures 283, 288, 293 and 298K.

The static permittivity (ϵ_0) and relaxation time (τ) for the binary mixture obtained by fitting experimental data with the Debye equation at four different temperatures are shown in figs. 1 and 2 respectively. In this study, the variation in the static permittivity and relaxation time with atarax of propanol are shown. It shows linear variation in the solution with change in mole fraction. The mole fraction of propanol increases, static permittivity decreases. This suggests that the intermolecular association is taking place in this region.

B. Excess Permittivity and Excess Inverse Relaxation Time

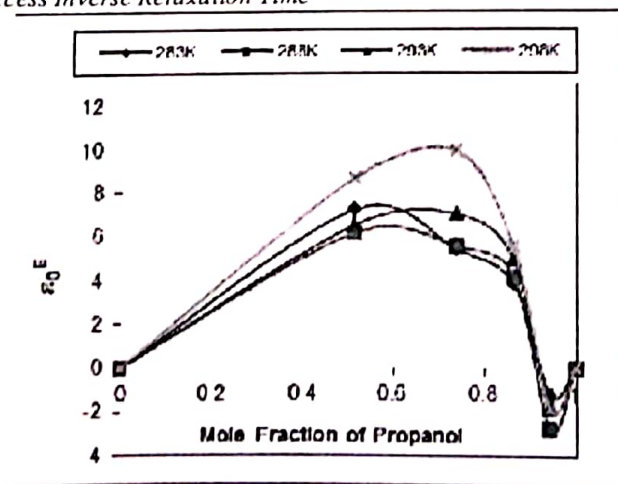


Fig. 3. Variation of excess permittivity (ϵ^E) as a function of mole fraction (x_2) of Propanol at temperatures 283, 288, 293 and 298K.

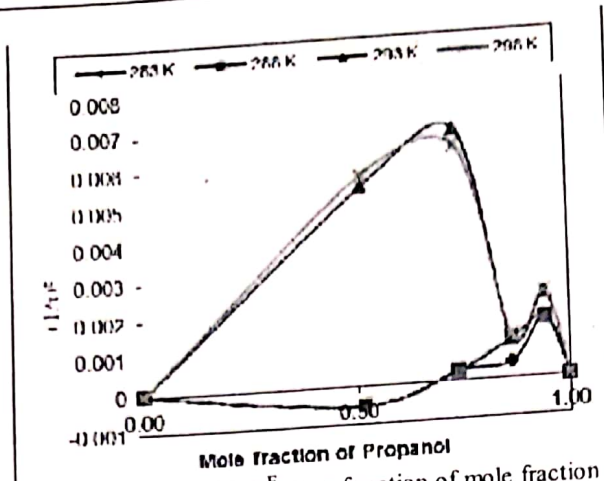


Fig. 4. Variation of excess inverse relaxation time $(1/\tau)^E$, as a function of mole fraction (x_2) of Propanol at temperatures 283, 288, 293 and 298K.

The variation of excess permittivity (ϵ_0^E) and excess inverse relaxation time $(1/\tau)^E$ with the mole fraction of propanol with atarax at different temperature is shown in figs. 3 and 4. The excess permittivity, values are positive and decreasing for concentrations up to 60% and at 80% of propanol it shows negative at all temperature. This indicates parallel alignment of dipole in the system and formation of monomer, which increases total number of dipoles up to 60%. At 80% of propanol for all temperature studied, indicates that the molecules of mixture may form multimers structures in such a way that the effective dipoles get reduced. This is due to the opposite alignment (antiparallel) of the dipoles in the mixture.

The behavior in $(1/\tau)^E$ is quite different as can be seen from figure (4) the values of $(1/\tau)^E$ are positive except 20% at 283 and 288K.

Conclusion

The values of static permittivity (ϵ_0) decreases, with increasing concentration of propanol, it shows linear variation in dielectric constant. The values of relaxation time (τ) changes change in mole fraction of propanol. The excess permittivity (ϵ_0^E) values are positive for all concentrations of propanol in atarax at all temperature except at 80% of Propanol. This indicates parallel alignment of dipole in the system and formation of monomer up to 60%, which increases total number of dipoles and changes to multimer at 80% of propanol. The values of $(1/\tau)^E$ are positive, except 20% at 283 and 288K.

Acknowledgement

The authors wish to acknowledge the Department of Physics Dr.B.A.M.University Aurangabad and Department of Physics S.R.T.M.University Nanded.

References

- 1) <https://en.wikipedia.org/wiki/Atarax>
- 2) Peranatham S, Manigandan G, Tamolselvi V, Shan mugam K. International Journal of Medical Toxicology and Forensic Medicine 2015;5(2):98-101.
- 3) <https://en.wikipedia.org/wiki/1-Propanol>
- 4) P.B.Undre, S.N.Helambe, S.B. Jagdale, P.W.Khirade and S.C. Mehrotra. Pramana J. Physics. 68. 851 (2007).
- 5) Manual T.D.R. Tektronix DSA8300.
- 6) C.E.Shannon, Proc. Inst. Radio Eng. 37, 10(1949).
- 7) H.A. Samulan. Proc. IRE, 39, 175 (1951).
- 8) S. Mashimo, S. Kuwabara, S. Yogihara, and K. Higasi, J. Chem. Phy. 90, 3292(1989).
- 9) P.Debye. Polar Molecules, Chemical Catalog. Co. New York. (1929).
- 10) P.R.Bevington. Data Reduction and Error Analysis for the Physical Sciences, McGraw Hill, New York(1969).
- 11) <http://shodhganga.inflibnet.ac.in/jspui/handle/10603/89385>